नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 38, नई दिल्ली, शनिवार 16 मई 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सफलता का मुख्य आधार सकारात्मक सोच और निरंतर प्रयास है। कठिनाइयां केवल आपके धैर्य की परीक्षा लेने आती हैं, आपको रोकने नहीं।

● 03 पति की लंबी आयु के लिए सुहागिनें 16 मई को रखेंगी वट सावित्री व्रत
● 06 बचपन, पुस्तकों और कल्पना की दुनिया
● 08 क्या हाइब्रिड परीक्षा मॉडल नीट-युजी को अधिक सुरक्षित बना सकता है?

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर मे "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

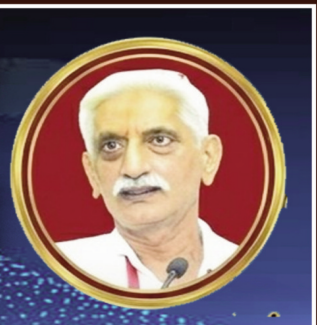

संजय बाठला
मुख्य संपादक

नीट नॉट क्लीन: भारत में विश्वास के बढ़ते संकट का प्रतीक बनती सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा

डॉ विजय गर्ग

भारत में जब भी किसी छात्र से उसके भविष्य के सपनों के बारे में पूछा जाता है, तो लाखों बच्चों का पहला उत्तर होता है — "डॉक्टर बनना है।" डॉक्टर का पेशा केवल रोजगार नहीं माना जाता, बल्कि सेवा, सम्मान, स्थिरता और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक समझा जाता है। इसी सपने को पूरा करने के लिए हर वर्ष देशभर के लाखों विद्यार्थी राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा यानी नीट में शामिल होते हैं।

नीट को एक ऐसी परीक्षा के रूप में प्रस्तुत किया गया था जो पूरे देश के छात्रों को समान अवसर देगी। चाहे छात्र किसी बड़े महानगर से हो या छोटे गांव से, महंगे निजी स्कूल से पढ़ा हो या सरकारी विद्यालय से — सभी को एक ही परीक्षा के माध्यम से मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश का अवसर मिलेगा।

लेकिन पिछले कुछ वर्षों में एक नया वाक्य तेजी से चर्चा में आया है:

"नीट नॉट क्लीन"

यह केवल एक नारा नहीं रह गया है। यह लाखों छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों के मन में पैदा हो रहे अविश्वास, डर, गुस्से और निराशा का प्रतीक बन चुका है। पेपर लीक, परीक्षा केंद्रों में गड़बड़ी, संदिग्ध परिणाम, ग्रेस मार्क्स विवाद, फर्जीवाड़ा, कोचिंग माफिया और प्रशासनिक लापरवाही जैसी घटनाओं ने देश की सबसे बड़ी मेडिकल प्रवेश परीक्षा की विश्वसनीयता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

आज समस्या केवल परीक्षा की नहीं है। समस्या उस भरोसे की है जिस पर भारत की पूरी प्रतियोगी परीक्षा प्रणाली खड़ी है।

नीट: केवल परीक्षा नहीं, करोड़ों सपनों का बोझ

भारत में नीट केवल एक एंट्रेंस टेस्ट नहीं है। यह:

- लाखों परिवारों की उम्मीद है,
- वर्षों की मेहनत का परिणाम है,
- आर्थिक संघर्ष का प्रतीक है,
- मानसिक दबाव की कहानी है।

कई विद्यार्थी 9वीं या 10वीं कक्षा से ही नीट की तैयारी शुरू कर देते हैं। वे:

- घंटों कोचिंग लेते हैं,
- हजारों एमसीक्यू हल करते हैं,
- त्योहार और छुट्टियाँ छोड़ देते हैं,
- मोबाइल और मनोरंजन से दूरी बना लेते हैं,
- नींद और मानसिक शांति तक खो बैठते हैं।

कई परिवार अपनी बचत तक खर्च कर देते हैं। कुछ माता-पिता कर्ज लेकर बच्चों को कोचिंग शहरों में भेजते हैं। छोटे कस्बों और गांवों के बच्चे भी बड़े सपनों के साथ इस कठिन प्रतियोगिता में उतरते हैं।

लेकिन जब परीक्षा की निष्पक्षता पर सवाल उठते हैं, तो सबसे बड़ा आघात इन्हीं ईमानदार छात्रों को लगता है।

"नीट नॉट क्लीन" की भावना क्यों बढ़ रही है?

पेपर लीक की घटनाएँ

किसी भी परीक्षा की विश्वसनीयता का आधार उसकी गोपनीयता होती है। लेकिन जब बार-बार पेपर लीक की खबरें सामने आती हैं, तो छात्रों का विश्वास टूटने लगता है।

यदि परीक्षा से पहले कुछ लोगों को प्रश्नपत्र मिल जाए, तो:

- मेहनती छात्रों की वर्षों की तैयारी कमजोर पड़ जाती है,
- मेरिट पर संदेह होने लगता है,
- ईमानदार प्रतियोगिता समाप्त हो जाती है।

नीट जैसी परीक्षा में एक-दो अंक भी हजारों रैंक बदल देते हैं। ऐसे में यदि किसी को अनुचित लाभ मिलता है, तो उसका असर पूरे परिणाम पर पड़ता है।

कोचिंग उद्योग और शिक्षा का व्यवसायीकरण

भारत में मेडिकल प्रवेश परीक्षाओं के साथ एक विशाल कोचिंग उद्योग खड़ा हो चुका है। कुछ शहर "कोचिंग राजधानी" बन चुके हैं।

यह स्थिति कई समस्याएँ पैदा करती है:

- गरीब और अमीर छात्रों के बीच अंतर,
- अत्यधिक आर्थिक दबाव,
- रटने वाली शिक्षा,
- मानसिक तनाव,
- शिक्षा का व्यापार में बदलना।

कई छात्र महसूस करते हैं कि केवल मेहनत काफी नहीं है; महंगी कोचिंग और संसाधन भी जरूरी हो गए हैं।

- संगठित नकल और परीक्षा माफिया

वर्षों से विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में:

- डमी उम्मीदवार,
- ब्लूटूथ डिवाइस,
- फर्जी पहचान पत्र,
- सॉल्वर गैंग,
- भ्रष्ट नेटवर्क

जैसी खबरें सामने आती रही हैं।

जब ऐसी घटनाएँ NEET जैसी परीक्षा से जुड़ती हैं, तो छात्रों का विश्वास और कमजोर हो जाता है। उन्हें लगता है कि कुछ लोग पैसे और प्रभाव के बल पर व्यवस्था को प्रभावित कर सकते हैं।

असमान शिक्षा व्यवस्था

भारत की शिक्षा व्यवस्था समान नहीं है।

एक ओर:

- बड़े शहरों के निजी स्कूल,
- आधुनिक लैब,
- एआई आधारित टेस्ट सिस्टम,
- अंग्रेजी माध्यम,
- विशेषज्ञ शिक्षक,

दूसरी ओर:

- ग्रामीण सरकारी विद्यालय,
- सीमित संसाधन,
- शिक्षक की कमी,
- कमजोर इंटरनेट,
- क्षेत्रीय भाषा की चुनौतियाँ।

ऐसे में "एक देश, एक परीक्षा" का विचार व्यवहार में पूरी तरह समान अवसर नहीं दे पाता।

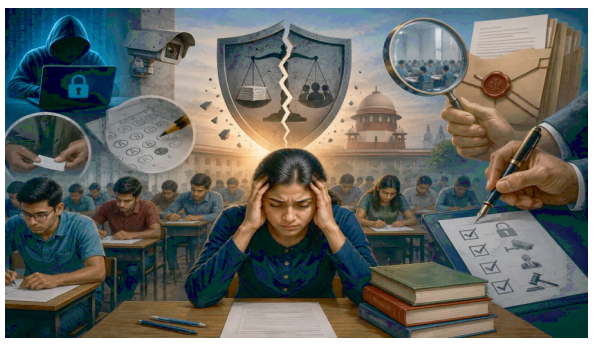

मानसिक स्वास्थ्य का संकट

नीट की तैयारी आज केवल शैक्षणिक संघर्ष नहीं रही, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य का बड़ा संकट बनती जा रही है।

कई विद्यार्थी:

- 12–14 घंटे पढ़ाई करते हैं,
- असफलता के डर में जीते हैं,
- सामाजिक तुलना से परेशान रहते हैं,
- लगातार तनाव झेलते हैं।

जब परीक्षा के बाद विवाद खड़े होते हैं, तो उनका मानसिक संतुलन और प्रभावित होता है।

कुछ छात्र सोचने लगते हैं:

- "क्या मेहनत का कोई मतलब है?"
- "क्या ईमानदारी से सफलता मिल सकती है?"
- "क्या सिस्टम पहले से तय है?"

यह भावना अत्यंत खतरनाक है क्योंकि यह युवाओं के आत्मविश्वास को कमजोर करती है।

सबसे बड़ा दर्द किसका?

जब भी कोई परीक्षा विवाद सामने आता है, चर्चा अक्सर:

- राजनीति,
- अदालत,
- एजेंसियों,
- प्रशासन

तक सीमित रह जाती है।

लेकिन सबसे बड़ा दर्द उस छात्र का होता है जिसने:

- वर्षों मेहनत की,
- परिवार की उम्मीदें उठाईं,
- खुद को सीमित कर लिया,
- हर दिन संघर्ष किया।

कल्पना कीजिए उस विद्यार्थी की जिसने:

- सुबह 4 बजे उठकर पढ़ाई की,
- हजारों टेस्ट दिए,
- दोस्तों से दूरी बनाई,
- मोबाइल छोड़ा,
- मानसिक दबाव सहा,
- और फिर उसे पता चले कि कुछ लोगों ने अनुचित तरीके से परीक्षा में लाभ लिया।

यह केवल शैक्षणिक अन्याय नहीं, भावनात्मक चोट भी है।

समाज पर इसका प्रभाव

मेरिट पर विश्वास कमजोर होना

यदि छात्रों को लगे कि मेहनत से अधिक जुगाड़ और भ्रष्टाचार महत्वपूर्ण है, तो समाज की मेरिट आधारित व्यवस्था कमजोर होने लगती है।

युवाओं में निराशा

जब युवा बार-बार अनियमितताएँ देखते हैं, तो वे:

- व्यवस्था से निराश होते हैं,
- ईमानदारी पर सवाल उठाते हैं,
- सामाजिक संस्थाओं पर भरोसा खोने लगते हैं।

भविष्य की चिकित्सा व्यवस्था पर असर

यदि मेडिकल प्रवेश प्रणाली पर भरोसा कमजोर होता है, तो यह भविष्य के डॉक्टरों की गुणवत्ता को लेकर भी चिंता पैदा करता है।

देश की स्वास्थ्य व्यवस्था की नींव मजबूत चयन प्रक्रिया पर ही निर्भर करती है।

क्या केवल डॉक्टर बनना ही सफलता है?

भारत में एक खतरनाक मानसिकता विकसित हो गई है कि:

"यदि नीट नहीं निकला, तो जीवन असफल है।"

यह सोच गलत है।

दुनिया में सफलता के अनेक क्षेत्र हैं:

- रिसर्च,
- फार्मेसी,
- बायोटेक्नोलॉजी,
- नर्सिंग,
- साइकोलॉजी,
- पर्यावरण विज्ञान,
- इंजीनियरिंग,
- अध्यापन,
- पत्रकारिता,
- सिविल सेवा,
- उद्यमिता।

एक परीक्षा किसी छात्र की पूरी क्षमता तय नहीं कर सकती।

सुधार की दिशा क्या हो सकती है?

परीक्षा सुरक्षा मजबूत हो

- एन्क्रिप्टेड पेपर सिस्टम,
- रियल टाइम निगरानी,
- डिजिटल ट्रैकिंग,
- कड़ी जवाबदेही।

त्वरित और पारदर्शी जांच

हर आरोप की निष्पक्ष और तेज जांच होनी चाहिए।

शिक्षा में समानता

ग्रामीण और सरकारी स्कूलों को मजबूत बनाना अत्यंत आवश्यक है।

मानसिक स्वास्थ्य सहायता

स्कूलों और कोचिंग संस्थानों में काउंसलिंग व्यवस्था होनी चाहिए।

एक परीक्षा पर अत्यधिक निर्भरता कम हो

छात्रों के मूल्यांकन के वैकल्पिक मॉडल भी विकसित किए जा सकते हैं।

छात्रों को डर नहीं, विश्वास चाहिए

भारत के विद्यार्थी असंभव मांग नहीं कर रहे। वे केवल चाहते हैं:

- निष्पक्षता,
- पारदर्शिता,
- समान अवसर,
- मेहनत का सम्मान।

यदि देश की सबसे बड़ी मेडिकल परीक्षा पर भरोसा कमजोर होता है, तो उसका असर केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रहेगा। यह आने वाली पीढ़ियों के मनोबल को भी प्रभावित करेगा।

निष्कर्ष

"नीट नॉट क्लीन" केवल एक विरोधी नारा नहीं है। यह उस गहरी चिंता का संकेत है जो भारत के युवाओं के मन में पैदा हो रही है।

एक परीक्षा तभी सफल मानी जा सकती है जब छात्र यह महसूस करें कि:

- नियम सबके लिए समान हैं,
- मेहनत का मूल्य है,
- ईमानदारी से सफलता मिल सकती है।

भारत का भविष्य केवल डॉक्टरों की संख्या से तय नहीं होगा, बल्कि इस बात से तय होगा कि डॉक्टर बनने की प्रक्रिया कितनी निष्पक्ष, पारदर्शी और विश्वसनीय है।

यदि भरोसा टूट गया, तो सबसे बड़ी परीक्षा भी अपना अर्थ खो देगी।

डॉ विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, मलोट, पंजाब

"जिस आंदोलन की दशा-दिशा तय नहीं, उसका अंजाम अक्सर पतन या सौदेबाज़ी होता है"

डॉ. राजकुमार यादव का देशभर के ट्रक चालकों, ट्रक मालिकों और परिवहन व्यवसायियों के नाम भावुक और चेतनापूर्ण संदेश

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला: "बिना दशा और दिशा के किया गया कोई भी आंदोलन या तो झुक जाता है, या फिर बिक जाता है।" यह कहना है डॉ. राजकुमार यादव का, जिन्होंने देशभर के ट्रक चालकों, ट्रक मालिकों और परिवहन व्यवसायियों के नाम एक गंभीर, मार्मिक और आत्ममंथन कराने वाला संदेश जारी किया है। उनका यह संदेश आज परिवहन जगत में तेजी से चर्चा का विषय बनता जा रहा है।

डॉ. यादव ने कहा कि यदि इस देश की अर्थव्यवस्था को जीवित रखने वाली कोई असली शक्ति है, तो वह सड़क पर दिन-रात दौड़ने वाला ट्रक चालक है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था की रक्त धमनियों की तरह हर राज्य, हर शहर और हर उद्योग को जोड़ता है। वही चालक, जो तपती धूप, कड़ाके की ठंड और अंधेरी बरसाती रातों में भी सैकड़ों किलोमीटर तक वाहन चलाकर देश की आपूर्ति व्यवस्था को जीवित रखता है, आज सबसे अधिक शोषित, उपेक्षित और मानसिक रूप से टूटता हुआ दिखाई दे रहा है। उन्होंने कहा कि वर्षों से बड़े-बड़े संगठन, राजनैतिक ठेकेदार, कॉरपोरेट समूह और तथाकथित शातिर नेतृत्वकर्ता ट्रांसपोर्टरों और चालकों की पीड़ा को अपना मंच बनाकर स्वार्थ की राजनीति करते रहे हैं। हर बार आंदोलन और हड़ताल के नाम पर ट्रक चालकों और मालिकों को सड़कों पर उतारा गया, लेकिन फैसले बंद कमरों में हुए और लाभ कुछ चुनिंदा लोगों तक सीमित रह गया। संघर्ष करने वाला चालक और ट्रक मालिक वहीं का वहीं खड़ा रह गया — कर्ज, अपमान, बढ़ती महंगाई और असुरक्षा के बोझ तले दबा हुआ।

डॉ. यादव ने कहा कि जिस आंदोलन का स्पष्ट उद्देश्य न हो, जिसकी रणनीति पारदर्शी न हो और जिसमें भाग लेने वालों से ईमानदार संवाद न किया जाए, वह आंदोलन अधिकारों की लड़ाई नहीं, बल्कि मजबूर लोगों की भावनाओं का व्यापार बन जाता है। उन्होंने ट्रक चालकों, ट्रक मालिकों और परिवहन व्यवसायियों से अपील की कि किसी भी आंदोलन में शामिल होने से पहले यह अवश्य समझें कि उसका नेतृत्व कौन कर रहा है, उसकी दिशा क्या है और उससे वास्तविक लाभ किसे मिलने वाला है।

उन्होंने कहा कि परिवहन क्षेत्र के लोगों को अब केवल भीड़ नहीं, बल्कि जागरूक शक्ति बनना होगा। जब तक ट्रक चालक, ट्रक मालिक और परिवहन व्यवसायी अपने अधिकारों, डीजल कीमतों, टोल टैक्स, बीमा, सड़क सुरक्षा और श्रम कानूनों के प्रति संगठित और आत्मजागृत नहीं होंगे, तब तक उनका शोषण समाप्त नहीं होगा।

अपने संदेश के अंत में डॉ. यादव ने कहा, "जिस दिन ट्रक चालक और ट्रक मालिक अपनी असली ताकत पहचान लेगा, उस दिन इस देश की सड़कों पर केवल वाहन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान दौड़ेगा। संघर्ष जरूर कीजिए, लेकिन सोच-समझकर। क्योंकि आपका पसीना किसी की राजनीति का ईंधन और आपके सम्मान का सौदा नहीं बनना चाहिए।"

डीजल, पेट्रोल और सीएनजी के दाम बढ़ाकर ट्रांसपोर्टरों को मजबूरन इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने के लिए दबाव बनाया जा रहा है: संजय सम्राट

परिवहन विशेष न्यूज

आज सरकार द्वारा डीजल और पेट्रोल के दामों में 3 प्रति लीटर तथा सीएनजी के दामों में 2 प्रति किलो की बढ़ोतरी किए जाने से देशभर के टैक्सी, बस एवं पर्यटन परिवहन क्षेत्र पर सीधा असर पड़ेगा। इस बढ़ोतरी के कारण टैक्सी और बस ऑपरेटरों को अपने किराए बढ़ाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, जिसका प्रभाव देशी और विदेशी पर्यटकों पर भी पड़ेगा। दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष ने कहा कि ट्रांसपोर्टर पहले से ही आर्थिक दबाव, कम काम और बढ़ते खर्चों से जूझ रहे हैं। ऐसे में ईंधन और सीएनजी की कीमतों में लगातार वृद्धि परिवहन व्यवसाय को और अधिक संकट में डाल रही है।

उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार डीजल, पेट्रोल और सीएनजी की कीमतें बढ़ाकर तथा उनकी कमी और प्रदूषण का डर दिखाकर देश में इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना चाहती है। सरकार यह संदेश देना चाहती है कि इलेक्ट्रिक वाहन सस्ते और लाभकारी हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि इलेक्ट्रिक वाहन पारंपरिक डीजल और पेट्रोल वाहनों की तुलना में कई गुना महंगे हैं। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रिक वाहनों का रखरखाव अत्यधिक महंगा है, उनकी आफ्टर-सेल्स सर्विस अभी भी संतोषजनक नहीं है, और भविष्य में उनकी रीसेल वैल्यू को लेकर भी ट्रांसपोर्टरों के मन में गंभीर चिंताएं हैं। ट्रांसपोर्ट व्यवसाय से जुड़े लोगों को डर है कि आने वाले समय में ये वाहन उनके लिए "कबाड़" साबित हो सकते हैं।

संजय सम्राट ने यह भी कहा कि सरकार प्रदूषण के नाम पर लगातार ट्रांसपोर्टरों पर इलेक्ट्रिक वाहन थोपने का प्रयास कर रही है। विशेष रूप से स्कूल बसों और कमर्शियल वाहनों में हर वर्ष ई-व्हीकल का प्रतिशत बढ़ाने की नीति से ट्रांसपोर्टर वर्ग पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ रहा है।

उन्होंने कहा कि सरकार की नीतियों से ऐसा प्रतीत होता है कि डीजल, पेट्रोल और सीएनजी के दाम बढ़ाकर ट्रांसपोर्टरों को मजबूरन इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने के लिए दबाव बनाया जा रहा है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com,

आज का साइबर सुरक्षा विचार : NCRP मनी रेस्टोरेशन पोर्टल – आपके पैसे वापस पाने का आसान रास्ता

पिंकी कुंडू

विजिट करें:
https://mrm-ncrp.mha.gov.in/login

यह क्यों महत्वपूर्ण है

हजारों पीड़ित इस पोर्टल से अनजान होने के कारण उम्मीद खो देते हैं। साइबर वित्तीय धोखाधड़ी के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) धोखाधड़ी वाले लेनदेन को फ्रीज करने और चोरी के पैसे को वापस लाने के लिए एक समान, कानूनी रूप से समर्थित ढांचा प्रदान करती है। सीमित प्रचार के कारण, कई पीड़ित अपने ठगे गए पैसे को वापस पाने में असमर्थ होते हैं और अंततः उम्मीद खो देते हैं। साइबर वित्तीय धोखाधड़ी से निपटने के लिए SOP ने धोखाधड़ी वाले लेनदेन को फ्रीज करने और धन वापस करने के लिए एक मानकीकृत, कानूनी रूप से समर्थित प्रक्रिया बनाई है।

NCRP मनी रेस्टोरेशन पोर्टल के माध्यम से पैसे वापस पाने के लिए, आपको पहले अपने मोबाइल नंबर और ओटीपी (OTP) के साथ लॉगिन करना होगा, फिर धोखाधड़ी के विवरण, लेनदेन के सबूत और बैंक खाते की जानकारी जमा करके रिफंड अनुरोध दर्ज करना होगा। यह पोर्टल गृह मंत्रालय द्वारा प्रबंधित किया जाता है और सत्यापन के लिए बैंकों और कानून प्रवर्तन एजेंसियों से सीधे जुड़ता है।

चरण-दर-चरण मार्गदर्शिका

1 लॉगिन (Login)

- मोबाइल नंबर दर्ज करें → ओटीपी प्राप्त करें → सत्यापित करें
- पासवर्ड भूल गए? 'फॉरगॉट पासवर्ड' विकल्प का उपयोग करें

2 रिफंड अनुरोध दर्ज करें (Raise Refund Request)

- 'Raise Refund Request' चुनें
- प्रदान करें:
  - धोखाधड़ी का प्रकार (UPI, कार्ड, घोटाला, आदि)
  - ट्रांजैक्शन आईडी / संदर्भ संख्या (Transaction ID / Reference number)
  - धोखाधड़ी की राशि और तारीख
  - बैंक विवरण (खाता संख्या, IFSC)
  - सबूत (स्क्रीनशॉट, एसएमएस, ईमेल)

3 सत्यापन (Verification)

- पोर्टल बैंक + पुलिस को अनुरोध भेजता है
- बैंक संदिग्ध खातों को फ्रीज करता है

- पुलिस + I4C म्यूल खातों (mule accounts) को ट्रैक करते हैं

4 स्थिति को ट्रैक करें (Track Status)

- प्रगति की जांच करने के लिए किसी भी समय लॉगिन करें: अंडर रिव्यू (समीक्षा के अधीन) → बैंक सत्यापन → पुलिस कार्रवाई → स्वीकृत/अस्वीकृत

5 रिफंड सेटलमेंट (Refund Settlement)

- सत्यापित मामले → पैसा आपके खाते में वापस आ जाता है
- ⏱ जितनी तेजी से रिपोर्ट करेंगे = पैसे वापस मिलने की संभावना उतनी ही अधिक होगी

जोखिम और नोट्स

- 1930 हेल्पलाइन या NCRP पोर्टल के माध्यम से 24 घंटे के भीतर रिपोर्ट करने का प्रयास करें

- सटीक विवरण = आसान रिकवरी

- सभी मामले सफल नहीं होते हैं (पैसे निकाल लिए जाने पर/विदेशी ट्रांसफर होने पर रिकवरी कठिन होती है)
- बड़े पैमाने पर होने वाली धोखाधड़ी के लिए पुलिस प्राथमिकी (FIR) दर्ज कर सकती है

नागरिकों के लिए व्यावहारिक सलाह

- लेनदेन का प्रमाण तैयार रखें (UPI ID, एसएमएस, स्क्रीनशॉट)
- NCRP डैशबोर्ड पर शिकायत की स्थिति को ट्रैक करें
- बड़ी धोखाधड़ी में FIR के लिए स्थानीय साइबर पुलिस स्टेशन से संपर्क करें
- जागरूकता फैलाएं — समय पर रिपोर्ट करने से पैसा बचता है!

Stay Cyber Safe. Act Fast. Recover Smart.

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

न्यूरोलॉजिस्ट जिसने साबित किया कि एक शब्द दर्द कम कर सकता है या दर्द पैदा कर सकता है

पिंकी कुंडू

सालों तक, प्लेसिबो इफ़ेक्ट को सिर्फ़ "मरीज़ को धोखा देना" माना जाता था। एक भ्रम, एक साइकोलॉजिकल नौटंकी।

जब तक एक साइंटिस्ट ने इसे शरीर में मापने का फ़ैसला नहीं किया।

उनका नाम फ़ैब्रिज़ियो बेनेडेटी है, जो प्लेसिबो, नोसेबो और दर्द के दुनिया के जाने - माने एक्सपर्ट्स में से एक हैं। उन्होंने जो खोजा वह पारंपरिक दवा के लिए अजीब था: दिमाग़ असली चीज़ें बना सकता है जो दर्द कम करती है या असली चीज़ें जो इसे और खराब करती हैं, मिसाल नहीं - असली केमिस्ट्री।

बेनेडेटी ने दिखाया कि

1. जब कोई इंसान राहत की उम्मीद करता है, तो दिमाग़ एंडोर्फिन, डोपामाइन और दूसरे नैचुरल पेनकिलर रिलीज़ करता है।

2. लेकिन जब कोई इंसान नुकसान की उम्मीद करता है:-

1. दर्द बढ़ जाता है।

2. लक्षण बिगड़ जाते हैं।

3. इलाज नकली होने पर भी साइड इफ़ेक्ट दिखाई देते हैं।

इसे नोसेबो इफ़ेक्ट कहते हैं। और यहीं से अजीब बात शुरू होती है:

* गलत तरीके से समझाया गया डायग्नोसिस दर्द बढ़ा सकता है

* अलार्म बजाने वाली चेतावनी से लक्षण और बिगड़ सकते हैं

* डर बीमारियों को क्रॉनिक बना सकता है

इसलिए नहीं कि मरीज़ "कल्पना कर रहा है।" बल्कि इसलिए कि नर्वस सिस्टम खतरों पर रिस्पॉन्ड करता है।

बेनेडेटी ने साफ़ - साफ़ कहा: "मरीज़ की उम्मीद बीमारी का रास्ता बदल सकती है।" यह पहले भी देखा जा चुका है:

1. क्रॉनिक दर्द
2. पार्किंसंस बीमारी
3. माइग्रेन
4. एंग्जायटी
5. फंक्शनल डिसऑर्डर

* इसका मतलब यह नहीं है कि सब कुछ दिमाग से ठीक हो सकता है।

* इसका मतलब यह नहीं है कि बीमारियाँ असली नहीं हैं।

इसका मतलब है कुछ ऐसा जिसे मानना मुश्किल है: दिमाग सिर्फ़ दर्द महसूस नहीं करता। वह इसे बनाने या कम करने में एक्टिवली हिस्सा लेता है।

इसलिए

* शब्द मायने रखते हैं,

* डायग्नोसिस मायने रखते हैं।

* हम चीज़ों को जिस तरह से समझाते हैं, वह मायने रखता है।

कभी - कभी, बिना एहसास हुए, दवा सिर्फ़ इलाज ही नहीं करती, यह घाव भी करती है।

साइंस जो हमें असहज कर देती है, लेकिन

स्क्रीन टाइमिंग से सिरदर्द और आंखों में दर्द होता है

पिंकी कुंडू

आंखों और सिर में एक साथ दर्द होना 'डिजिटल आई स्ट्रेन' का मुख्य लक्षण है। जब आंखों की मांसपेशियों पर लगातार दबाव पड़ता है, तो इससे सिरदर्द होता है।

इस स्थिति से निपटने के लिए आप यह उपाय कर सकते हैं:

1. तुरंत आराम के उपाय

* अंधेरे में आराम करें: कुछ देर के लिए स्क्रीन पूरी तरह से बंद कर दें और किसी अंधेरे या शांत कमरे में आंखें बंद करके लेट जाएं। तेज रोशनी से सिरदर्द बढ़ सकता है।

* ठंडी/गर्म पट्टी: आंखों और माथे पर ठंडे पानी की पट्टियां या 'आई मास्क' लगाएं। इससे मांसपेशियों को आराम मिलता है।

* हाइड्रेशन: कभी-कभी सिरदर्द डिहाइड्रेशन की वजह से भी हो सकता है। खूब पानी पिएं।

2. काम करने की आदतों में बदलाव

* 'एंटी-ग्लेयर' चश्मा: अगर आपके काम में घंटों स्क्रीन पर रहना शामिल है, तो अपने डॉक्टर की सलाह के अनुसार 'ब्लू कट' या 'एंटी-ग्लेयर' चश्मा इस्तेमाल करें।

* आँखों की एक्सरसाइज़: आँखों की पुतलियों को धीरे-धीरे घुमाने, दिन में दो बार ऊपर-नीचे देखने जैसी एक्सरसाइज़ करें।

3. इन लक्षणों को देखें (कुछ गंभीर कारण हो सकते हैं) अगर आँखों और सिर दोनों में दर्द हो, तो इनमें से कोई एक कारण हो सकता है:

* चश्मे का नंबर: हो सकता है कि आपकी आँखों का नंबर बदल गया हो। ऐसे में आँखों को ज़्यादा ज़ोर लगाना पड़ता है और सिर में दर्द होता है।

* माइग्रेन: अगर सिरदर्द एक तरफ है और रोशनी के साथ दर्द होता है, तो यह माइग्रेन हो सकता है।

* साइनस: अगर आपको नाक और माथे के आसपास दबाव महसूस होता है, तो यह दर्द साइनस की वजह से भी हो सकता है।

* आपको डॉक्टर को कब दिखाना चाहिए?

* अगर आपकी नज़र धुंधली हो।

* अगर सिरदर्द तेज़ हो और उल्टी जैसा महसूस हो।

* आराम करने के बाद भी दर्द कम न हो।

आपने पिछली बार अपनी आँखों की जाँच कब करवाई थी? अगर काफी समय हो गया है, तो एक बार अपनी आंखों की जांच करवाना सबसे अच्छा तरीका होगा।

कैंसरकारी रसायन और कृत्रिम रंग: भारत की मिठाइयों में छिपा गंभीर खतरा

भारत में मिठाइयाँ, केक, आइसक्रीम, बिस्कुट और अन्य बेकरी उत्पाद केवल खाद्य पदार्थ नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, उत्सव और आनंद का प्रतीक हैं। रंग-बिरंगी मिठाइयाँ हमारे त्योहारों की शान होती हैं। किन्तु इसी आकर्षक रंगत के पीछे एक गंभीर और अक्सर अनदेखा सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट छिपा हुआ है — कैंसरकारी (Carcinogenic) रसायनों और गैर-अनुमोदित कृत्रिम रंगों का अवैध उपयोग।

खतरनाक रसायन और अवैध रंग: असली दोषी कौन? कुछ असंगठित और लालची निर्माता सस्ते और तेज रंग देने वाले औद्योगिक (इंडस्ट्रियल) रंगों का उपयोग करते हैं, जो मानव उपभोग के लिए बिल्कुल भी स्वीकृत नहीं हैं। इनमें प्रमुख हैं:

1. Rhodamine B – कपड़ा उद्योग में प्रयुक्त फ्लोरोसेंट गुलाबी रंग
2. Metanil Yellow
3. Auramine
4. Sudan Dyes (I–IV)
5. Orange II
6. Malachite Green

यह रंग चमकीले लाल, गुलाबी, पीले या हरे रंग देने के लिए लड्डू, बर्फी, गुलाबी रुई की मिठाई (cotton candy), रंगीन आइसक्रीम और बिस्कुटों में मिलाए जाते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि से खतरा अनुसंधानों के अनुसार इनमें से कई रसायन:

1. जीनोटॉक्सिक (DNA को क्षति पहुँचाने वाले)
2. कैंसरकारी
3. यकृत (लिवर) और गुर्दे (किडनी) को नुकसान पहुँचाने वाले
4. तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने वाले
5. कैंसर जोखिम बढ़ाने वाले

अनुमोदित रंग भी सुरक्षित नहीं जब सीमा से अधिक हों FSSAI (भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण) ने केवल 8 कृत्रिम रंगों को सीमित मात्रा (अधिकतम 100 ppm) तक अनुमति दी है, जैसे:

1. Tartrazine (Yellow 5)
2. Sunset Yellow FCF
3. Allura Red
4. Ponceau 4R
5. Carmoisine

लेकिन जब इनका प्रयोग निर्धारित सीमा से अधिक किया जाता है, तो यह भी गंभीर दुष्प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं:

1. बच्चों में अतिसक्रियता (Hyperactivity)
2. एलर्जी और अस्थमा
3. त्वचा की संवेदनशीलता
4. अंगों की विषाक्तता
5. संभावित कैंसर - उत्तेजक प्रभाव

हाल के परीक्षण और चौंकाने वाले तथ्य (2024–2025)

अक्टूबर 2024 – कर्नाटक जांच कर्नाटक राज्य में 235 केक नमूनों की जांच में 12 नमूनों में अत्यधिक कृत्रिम रंग पाए गए। इनमें लोकप्रिय केक जैसे Red Velvet और Black Forest शामिल थे।

सरकार ने चेतावनी दी कि यह कैंसर सहित मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हो सकता है।

2024 – गुलाबी रुई की मिठाई पर प्रतिबंध तमिलनाडु सहित कई राज्यों में Rhodamine B पाए जाने के बाद गुलाबी कॉटन कैंडी पर प्रतिबंध लगाया गया।

2025 – Auramine पर राष्ट्रव्यापी कार्रवाई नवंबर–दिसंबर 2025 में FSSAI ने भुने चने और अन्य खाद्य पदार्थों में Auramine के उपयोग पर सख्त कार्रवाई शुरू की। दोषियों पर खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत कठोर दंड का प्रावधान है।

नवीनतम नियम और सुधार (2025–2026) FSSAI ने खाद्य योजकों के नियमों में संशोधन किए (कुछ फरवरी 2026 से प्रभावी)।

1. रंगों की सीमा और परीक्षण प्रक्रिया को और कठोर बनाया गया।

2. राज्यों को नियमित सैंपलिंग और निरीक्षण के निर्देश दिए गए।

प्राकृतिक विकल्प: सुरक्षित और स्वास्थ्यवर्धक मार्ग सरकार और उद्योग अब प्राकृतिक रंगों को बढ़ावा दे रहे हैं:

1. चुकंदर (Beetroot) से Betalains
2. हल्दी से Curcumin, Annatto
3. पालक/क्लोरोफिल Spirulina

यह ना केवल सुरक्षित हैं बल्कि एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर भी हैं।

समस्या क्यों बनी हुई है? भारत के विशाल असंगठित खाद्य क्षेत्र में:

1. सस्ते उत्पादन की होड़
2. निगरानी की सीमाएँ
3. उपभोक्ता जागरूकता की कमी

इन कारणों से मिलावट जारी रहती है।

उपभोक्ताओं के लिए सावधानियाँ

1. केवल FSSAI लाइसेंस नंबर वाले उत्पाद खरीदें।
2. अत्यधिक चमकीले और अस्वाभाविक रंगों से बचें।
3. लेबल पढ़ें – रंगों के नाम और मात्रा देखें।
4. घर पर बने या विश्वसनीय दुकानों से खरीदें।
5. बच्चों को अत्यधिक रंगीन खाद्य पदार्थों से दूर रखें।

निष्कर्ष त्योहारों की मिठास तब तक सार्थक है जब तक वह स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित हो।

* चमकीले रंगों का आकर्षण क्षणिक है, परंतु स्वास्थ्य हानि दीर्घकालिक और कभी - कभी अपरिवर्तनीय हो सकती है।

* स्वास्थ्य ही वास्तविक संपदा है।

यदि हम प्राकृतिक विकल्प अपनाएँ, जागरूक रहें और जवाब देही की मांग करें, तो भारत की मिठाइयाँ सचमुच सुरक्षित, शुद्ध और आनंददायक बन सकती हैं।

आयुर्वेद हमारे शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का समग्र विज्ञान

पिंकी कुंडू

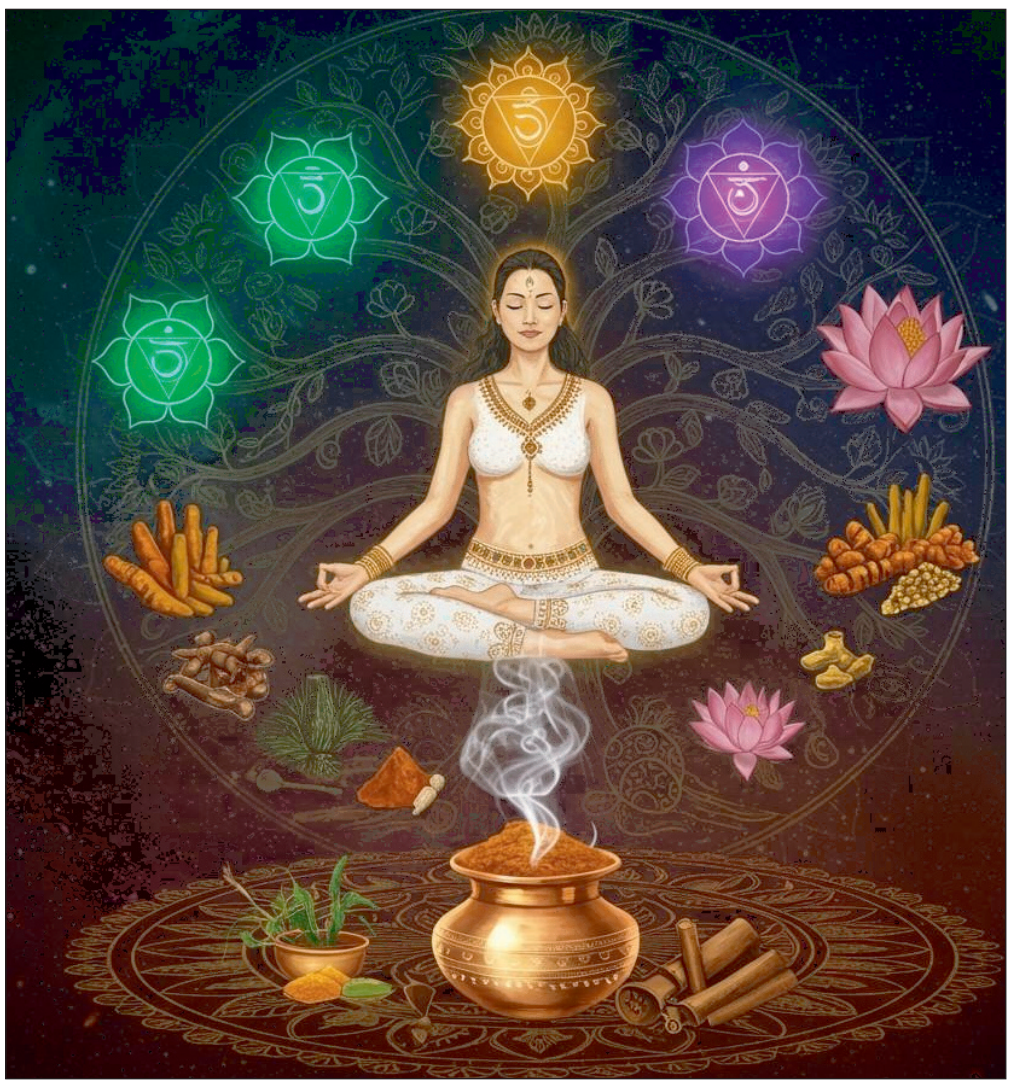

1. आयुर्वेद प्राचीन एवं गौरवशाली परंपरा,

2. भारतीय ज्ञान – संस्कृति की अमूल्य धरोहर,

3. केवल रोग - निवारण पद्धति नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का समग्र विज्ञान है।

इसी परंपरा में त्रिफला (आंवला, हरड़ और बहेड़ा का समन्वित योग) को अत्यंत पवित्र, प्रभावशाली और दीर्घायु प्रदान करने वाला रसायन माना गया है।

त्रिफला को आयुर्वेद में –

1. सौम्य विरेचक (मृदु शुद्धिकरण करने वाला),
2. पाचनशक्ति-वर्धक,
3. रसायन (पुनर्यौवनदायक),
4. नेत्र - हितकारी, तथा
5. दोष-संतुलनकारी (वात, पित्त, कफ) माना गया है।

किन्तु आधुनिक समय में, इस प्राकृतिक और पवित्र छवि के पीछे एक गंभीर चुनौती उभरकर सामने आई है — भारी धातुओं, विशेषतः सीसा से संदूषण का खतरा।

सीसा : एक मूक एवं घातक विष

सीसा एक अत्यंत विषैला न्यूरोटॉक्सिन है, जिसके लिए कोई सुरक्षित स्तर निर्धारित नहीं है।

शरीर पर इसके प्रभाव:

बच्चों में:

1. मस्तिष्क विकास में बाधा
2. आईक्यू में कमी
3. व्यवहारगत विकार
4. सीखने की क्षमता में ह्रास

वयस्कों में:

1. उच्च रक्तचाप
2. गुर्दा क्षति
3. एनीमिया
4. पेट दर्द एवं थकान
5. स्मृति - भ्रंश एवं तंत्रिका विकार
6. प्रजनन समस्याएँ
7. हृदय - रोग का बढ़ा जोखिम

अत्यधिक स्तर पर:

1. दौरे
2. कोमा
3. एन्सेफैलोपैथी (मस्तिष्क क्षति)
4. मृत्यु तक संभव

विश्व स्वास्थ्य संगठन एवं सीडीसी के अनुसार, सीसा शरीर में कैल्शियम जैसे खनिजों की नकल करता है, एंजाइमों के कार्य में बाधा डालता है और हड्डियों व ऊतकों में जमा होकर दीर्घकालिक क्षति पहुँचाता है।

आयुर्वेदिक औषधियों में भारी धातुओं का प्रश्न आयुर्वेद की कुछ परंपराओं — विशेषतः रसशास्त्र — में धातुओं को विशेष प्रक्रियाओं से शोधन कर औषधि में प्रयुक्त किया जाता है।

परंतु समस्या दो प्रकार से उत्पन्न होती है:

1. जानबूझकर धातुओं का सम्मिलन (रसायन परंपरा)
2. अनजाने में संदूषण —

* प्रदूषित मिट्टी या जल में उगाई गई औषधीय वनस्पतियाँ

* औद्योगिक क्षेत्रों की निकटता

* अनुचित निर्माण प्रक्रिया

* गुणवत्ता नियंत्रण की कमी

* अप्रमाणित या ऑनलाइन विक्रय

त्रिफला में प्रयुक्त फल भी प्रदूषित पर्यावरण से सीसा अवशोषित कर सकते हैं।

शोध एवं आँकड़े (पूर्व एवं हालिया अध्ययन) 2008 – 2016 के बीच भारत में किए गए कई अध्ययनों में कुछ ब्रांडेड त्रिफला चूर्ण में सीसा की मात्रा 15 –16 ppm तक पाई गई, जो निर्धारित मानकों (लगभग 10 ppm या उससे कम) से अधिक थी। हालाँकि सभी उत्पाद असुरक्षित नहीं हैं, परंतु गुणवत्ता में असंगति एक गंभीर चिंता का विषय बनी हुई है।

नवीनतम वैश्विक घटनाक्रम (2025 – 2026) हाल के वर्षों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयुर्वेदिक उत्पादों पर निगरानी कड़ी हुई है:

अमेरिका (एफडीए – दिसंबर 2025) कुछ अप्रमाणित आयुर्वेदिक उत्पादों में सीसा और पारा की उच्च मात्रा पाई गई। एफडीए ने चेतावनी जारी की कि कोई भी आयुर्वेदिक उत्पाद एफडीए - स्वीकृत नहीं है। सीसा विषाक्तता के मामले — गुर्दा क्षति, तंत्रिका विकार, पेट दर्द।

न्यूज़ीलैंड (2025 अध्ययन) जाँच किए गए आयुर्वेदिक उत्पादों में से लगभग दो - तिहाई में सीसा पाया गया। 20 से अधिक सीसा विषाक्तता के मामले दर्ज।

ऑस्ट्रेलिया (टीजीए – 2025) आयातित आयुर्वेदिक दवाओं में भारी धातु संदूषण से जुड़ी घटनाएँ। जनवरी 2025 में विक्टोरियन स्वास्थ्य विभाग द्वारा विशेष चेतावनी।

जर्मनी एवं अन्य देश कुछ मामलों में

* अत्यधिक उच्च सीसा स्तर (हजारों एमजी/केजी तक)।

* बच्चों में गंभीर विषाक्तता (रक्त में सीसा स्तर >123 यूजी/डीएल)।

* कुछ वयस्कों की मृत्यु के मामले।

भारत (राज्यसभा – दिसंबर 2025) संसद में आयुर्वेदिक, यूनानी एवं हर्बल दवाओं में भारी धातुओं पर प्रश्न, गुणवत्ता नियंत्रण सुदृढ़ करने की मांग।

क्या सभी त्रिफला असुरक्षित हैं? नहीं, भारत में कई प्रतिष्ठित, अच्छी उत्पादन कार्यप्रणाली - प्रमाणित (अच्छी उत्पादन कार्यप्रणाली) कंपनियाँ:

* कच्चे माल की जाँच करती हैं

* आईएसओ एवं आयुष प्रमाणन रखती हैं

* थर्ड-पार्टी लैब से भारी धातु विश्लेषण करवाती हैं

समस्या मुख्यतः अनियमित, सस्ते, अप्रमाणित, ऑनलाइन या अनधिकृत स्रोतों से खरीदे गए उत्पादों में अधिक पाई जाती है।

उपभोक्ताओं के लिए सावधानियाँ यदि आप त्रिफला या अन्य आयुर्वेदिक औषधि का सेवन करते हैं:

1. केवल विश्वसनीय एवं प्रमाणित ब्रांड चुनें।

2. पैकेज पर भारी धातु परीक्षण रिपोर्ट या विश्लेषण का प्रमाण पत्र देखें।

3. आयुष लाइसेंस एवं जीएमपी चिह्न की पुष्टि करें।

4. बच्चों, गर्भवती महिलाओं या दीर्घकालिक रोगियों को बिना चिकित्सकीय सलाह सेवन न कराएँ।

5. लक्षण (थकान, पेट दर्द, चिड़चिड़ापन, एनीमिया) होने पर रक्त जाँच करवाएँ।

संतुलित निष्कर्ष आयुर्वेद की परंपरा अमूल्य है — यह हजारों वर्षों की चिकित्सा - प्रज्ञा का सार है। त्रिफला जैसी औषधियाँ यदि शुद्ध और प्रमाणित हों तो अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकती हैं।

किन्तु आधुनिक औद्योगिक प्रदूषण और विनिर्माण की अनियमितताओं ने एक नई चुनौती प्रस्तुत की है। अतः— "परंपरा का सम्मान विवेक के साथ, और स्वास्थ्य का संरक्षण सतर्कता के साथ।" आवश्यक है कि:

1. नियामक संस्थाएँ कठोर परीक्षण एवं निगरानी लागू करें।
2. निर्माता पारदर्शिता अपनाएँ।
3. उपभोक्ता जागरूक एवं सावधान रहें।

इस प्रकार हम आयुर्वेद की गौरवशाली धरोहर को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक वैज्ञानिक मानकों के साथ समन्वय स्थापित कर सकते हैं।

वट सावित्री व्रत आज

वट सावित्री का व्रत ज्येष्ठ माह में दो बार किया जाता है। पूर्व और उत्तर भारत में यह व्रत ज्येष्ठ अमावस्या को किया जाता है, जबकि दक्षिण और मध्य भारत में इसे ज्येष्ठ पूर्णिमा को किया जाता है। विवाहित महिलाओं के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण व्रत माना जाता है। इस दिन सुहागिन महिलाएं पति की लंबी उम्र और सुखद दांपत्य जीवन की कामना के लिए वट वृक्ष की पूजा करती हैं।

वट सावित्री व्रत कब है ?:-

पंचांग के अनुसार, इस बार ज्येष्ठ माह की अमावस्या तिथि 16 मई, शनिवार को सुबह 5 बजकर 12 मिनट पर लगेगी और रात में 1 बजकर 31 मिनट पर समाप्त हो जाएगी। उदयातिथि को देखते हुए वट सावित्री व्रत 16 मई को किया जाएगा।

वट सावित्री व्रत पूजा मुहूर्त :- इस दिन पूजा के लिए शुभ समय अभिजीत मुहूर्त का रहेगा। सुहागिन महिलाएं 16 मई को सुबह 11 बजकर 50 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 44 मिनट तक शुभ मुहूर्त में पूजा कर सकती हैं।

वट सावित्री व्रत में बरगद पर जरूर अर्पित करें ये चीजें :-

वट सावित्री व्रत के दिन वट वृक्ष की पूजा के दौरान सूती वस्त्र, लाल फूल, सिंदूर, कच्चा सूत, अक्षत (अटूट चावल), जनेऊ, चंदन और पान-सुपारी अर्पित करने चाहिए। वट वृक्ष के पास घी का दीपक जलाएं और श्रद्धा अनुसार, पेड़ की 7 या 108 बार परिक्रमा करते हुए कच्चा सूत या मौली (लाल/पीला धागा) लपेटें। ऐसा करने से वैवाहिक संबंध मजबूत होते हैं।

इस भोग के बिना अधूरा है वट सावित्री व्रत :- वट सावित्री व्रत में भीगे हुए चने (चने की दाल) का विशेष महत्व है, इसे सावित्री और सत्यवान को अर्पित करें। इसके बिना भोग पूरा नहीं माना जाता है। पूजा में 5 प्रकार के ऋतु फल (जैसे आम, जामुन, केला, तरबूज, खरबूज, नारियल पानी) भी जरूर शामिल करें। पूजा में गुड़ से बनी मिठाई या गुड़ से बनी मीठी पूरी भी अर्पित कर सकते हैं।

देवी सावित्री को श्रृंगार की सामग्री अर्पित करें :- वट सावित्री व्रत में माता सावित्री की भी विधि-विधान से पूजा करनी चाहिए। उनको सिंदूर, कुमकुम, मेहंदी, चूड़ियां और बिंदी जैसी श्रृंगार की सामग्री जरूर चढ़ाएं। मान्यता है कि माता सावित्री को सुहाग का सामान चढ़ाने से व्रती महिला को 'अखंड सौभाग्य' का आशीर्वाद मिलता है।

वट सावित्री व्रत पूजा विधि :- इस दिन सुहागिन महिलाओं को सुबह स्नान करके नए वस्त्र और सोलह श्रृंगार करना चाहिए।

शाम के समय बरगद के पेड़ के नीचे माता सावित्री की पूजा करें। पूजन सामग्री को पेड़ की जड़ में चढ़ाएं।

इसके बाद वट वृक्ष को प्रसाद का भोग लगाएं और धूप-दीपक दिखाएं।

इस के बाद हाथ जोड़कर माता सवित्री से पति की लंबी उम्र की कामना करें।

वट वृक्ष के चारों ओर 7 बार परिक्रमा करते हुए कच्चे धागे या मोली को 7 बार लपेटें। अंत में बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर माता सावित्री-सत्यवान की कथा सुनें।

वट सावित्री व्रत पर क्यों होती है बरगद के पेड़ की पूजा :- हिंदू धर्म में बरगद के पेड़ को वट वृक्ष और अक्षय वट के नाम से भी जाना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, बरगद के पेड़ की जड़ में ब्रह्मा जी, तने में जगत के पालनहार भगवान विष्णु और शाखाओं में भगवान शिव का वास होता है। ज्येष्ठ मास की अमावस्या के दिन इसी पेड़ के नीचे माता सावित्री ने अपने पति को पुनर्जीवित कराया था। इसलिए विवाहित महिलाएं पति कि दीर्घायु और अखंड सौभाग्य के लिए इसकी पूजा करती है।

पति की लंबी आयु के लिए सुहागिनें 16 मई को रखेंगी वट सावित्री व्रत

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि पंचांग के मुताबिक वट सावित्री व्रत ज्येष्ठ मास की अमावस्या तिथि पर रखा जाता है। ज्येष्ठ माह की अमावस्या तिथि की शुरुआत 16 मई को प्रात: 05:11 मिनट से शुरू होगी और इसका समापन 17 मई को देर रात 01:30 मिनट पर होगी।

इस बार वट सावित्री व्रत और सोमवती अमावस्या का खास संयोग बन रहा है। वट सावित्री व्रत 16 मई को है। ज्येष्ठ मास में पड़ने वाले सारे व्रतों में वट सावित्री व्रत को बहुत प्रभावी माना जाता है। जिसमें सौभाग्यवती महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और सभी प्रकार की सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर जोधपुर के निदेशक ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि इस बार वट सावित्री व्रत 16 मई को पड़ रहा है। वट सावित्री व्रत ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि से अमावस्या तक उत्तर भारत में और ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में इन्हीं तिथियों में वट सावित्री व्रत दक्षिण भारत में मनाया जाता है। वट सावित्री व्रत को उत्तर भारत के उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब, दिल्ली और हरियाणा समेत कई जगहों पर मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि जितनी उम्र बरगद के पेड़ की होती है, सुहागिनें भी बरगद के पेड़ की उम्र के बराबर अपने पति की उम्र मांगती हैं। हिंदू धर्म में बरगद का वृक्ष पूजनीय माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार, इस वृक्ष में सभी देवी-देवताओं का वास होता है। इस वृक्ष की पूजा करने से अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इसके अलावा इस दिन जल से वटवृक्ष को सींचकर उसके तने के चारों ओर कच्चा धागा लपेटकर तीन बार परिक्रमा करें।

ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि इस दिन महिलाएं व्रत रखकर वट वृक्ष के पास जाकर धूप, दीप नैवेद्य आदि से पूजा करती हैं। साथ ही रोली और अक्षत चढ़ाकर वट वृक्ष पर कलावा बांधती हैं और हाथ जोड़कर वट वृक्ष की परिक्रमा करती हैं। जिससे उनके पति के जीवन में आने वाली बाधाएं दूर होती हैं और लंबी उम्र की प्राप्ति होती है। वहीं सोमवती अमावस्या पर स्नान, दान, पितरों की पूजा और धन प्राप्ति के खास उपाय भी किए जाते हैं। अमावस्या तिथि के दिन महिलाएं बांस की टोकरी में सप्त धान्य के ऊपर ब्रह्मा और वट सावित्री और दूसरी टोकरी में सत्यवान एवं सावित्री की प्रतिमा स्थापित करके वट के समीप जाकर पूजन करती हैं। साथ ही इस दिन यम का भी पूजन करती हैं और वट की परिक्रमा करते समय 108 बार वट वृक्ष में कलावा लपेटा जाता है। मंत्र का जाप करते हुए सावित्री को अर्घ्य दिया जाता है। वहीं सौभाग्य पिटारी और पूजा सामग्री किसी योग्य साधक को दी जाती है। इस व्रत में सत्यवान और सावित्री की कथा का श्रवण किया जाता है।

वट सावित्री व्रत

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि पंचांग के मुताबिक वट सावित्री व्रत ज्येष्ठ मास की अमावस्या तिथि पर रखा जाता है। ज्येष्ठ माह की अमावस्या तिथि की शुरुआत 16 मई को प्रातः 05:11 मिनट से शुरू होगी और इसका समापन 17 मई को देर रात 01:30 मिनट पर होगी। ऐसे में 16 मई 2026 को वट सावित्री व्रत का व्रत रखा जाएगा। शास्त्रों के अनुसार, यह व्रत विशेष रूप से विवाहित महिलाओं के लिए होता है। इस दिन महिलाएं पति की लंबी उम्र, सफलता, सेहत और अखंड सौभाग्य की कामना करते हुए निर्जला उपवास रखती हैं। इसके प्रभाव से रिश्तों में प्रेम-विश्वास और खुशियां वास करती हैं।

शुभ योग

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि पंचांग के अनुसार 16 मई को शनि जयंती के साथ शनिश्चरी अमावस्या का भी योग बन रहा है, जिससे यह दिन दोगुना फलदायी हो गया है। शनि अमावस्या पर व्रत और शनि देव की पूजा का विशेष महत्व होता है, इसलिए इस बार का संयोग भक्तों के लिए अत्यंत शुभ माना जा रहा है। इसके अलावा इस दिन सौभाग्य योग और शोभन योग भी बन रहे हैं। सौभाग्य योग 15 मई दोपहर 2:21 बजे से 16 मई सुबह 10:26 बजे तक रहेगा, जिसके बाद शोभन योग शुरू होगा और यह 17 मई सुबह 6:15 बजे तक प्रभावी रहेगा। इन दोनों योगों को शुभ कार्यों और पूजा-पाठ के लिए अत्यंत लाभकारी माना जाता है। शनि जयंती के दिन भरणी नक्षत्र प्रातःकाल से लेकर शाम 5:30 बजे तक रहेगा, इसके बाद कृत्तिका नक्षत्र का प्रभाव शुरू होगा। भरणी नक्षत्र के स्वामी शुक्र और देवता यमराज माने जाते हैं, जबकि कृत्तिका नक्षत्र के स्वामी सूर्य और देवता अग्नि हैं। इन सभी संयोगों के कारण इस वर्ष शनि जयंती का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है।

पूजन सामग्री

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि वट सावित्री व्रत की पूजन सामग्री में सावित्री-सत्यवान की मूर्तियां, धूप, दीप, घी, बांस का पंखा, लाल कलावा, सुहाग का समान, कच्चा सूत, चना (भिगोया हुआ), बरगद का फल, जल से भरा कलश आदि शामिल करना चाहिए।

पूजा विधि

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि इस दिन प्रातःकाल घर की सफाई कर नित्य कर्म से निवृत्त होकर स्नान करें। इसके बाद पवित्र जल का पूरे घर में छिड़काव करें। बांस की टोकरी में सप्त धान्य भरकर ब्रह्मा की मूर्ति की स्थापना करें। ब्रह्मा के वाम पार्श्व में सावित्री की मूर्ति स्थापित करें। इसी प्रकार दूसरी टोकरी में सत्यवान तथा सावित्री की मूर्तियों की स्थापना करें। इन टोकरियों को वट वृक्ष के नीचे ले जाकर रखें। इसके बाद ब्रह्मा तथा सावित्री का पूजन करें। अब सावित्री और सत्यवान की पूजा करते हुए बड़ की जड़ में पानी दें। पूजा में जल, मौली, रोली, कच्चा सूत, भिगोया हुआ चना, फूल तथा धूप का प्रयोग करें। जल से वटवृक्ष को सींचकर उसके तने के चारों ओर कच्चा धागा लपेटकर तीन बार परिक्रमा करें। बड़ के पत्तों के गहने पहनकर वट सावित्री की कथा सुनें। भीगे हुए चनों का बायना निकालकर, नकद रुपए रखकर अपनी सास के पैर छूकर उनका आशीष प्राप्त करें। यदि सास वहां न हो तो बायना बनाकर उन तक पहुंचाएं। पूजा समाप्ति पर ब्राह्मणों को वस्त्र तथा फल आदि वस्तुएं बांस के पात्र में रखकर दान करें। इस व्रत में सावित्री-सत्यवान की पुण्य कथा का श्रवण करना न भूलें। यह कथा पूजा करते समय दूसरों को भी सुनाएं।

महत्व

शास्त्रों के अनुसार, वट वृक्ष के नीचे बैठकर ही सावित्री ने अपने पति सत्यवान को दोबारा जीवित कर लिया था। दूसरी कथा के अनुसार मार्कण्डेय ऋषि को भगवान शिव के वरदान से वट वृक्ष के पत्ते में पैर का अंगूठा चूसते हुए बाल मुकुंद के दर्शन हुए थे, तभी से वट वृक्ष की पूजा की जाती है। वट वृक्ष की पूजा से घर में सुख-शांति, धनलक्ष्मी का भी वास होता है।

सावित्री की कथा

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि राजर्षि अश्वपति की एकमात्र संतान थीं सावित्री। सावित्री ने वनवासी राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान को पति रूप में चुना। लेकिन जब नारद जी ने उन्हें बताया कि सत्यवान अल्पायु हैं, तो भी सावित्री अपने निर्णय से डिगी नहीं। वह समस्त राजवैभव त्याग कर सत्यवान के साथ उनके परिवार की सेवा करते हुए वन में रहने लगीं। जिस दिन सत्यवान के महाप्रयाण का दिन था, उस दिन वह लकड़ियां काटने जंगल गए। वहां मूच्छिछत होकर गिर पड़े। उसी समय यमराज सत्यवान के प्राण लेने आए। तीन दिन से उपवास में रह रही सावित्री उस घड़ी को जानती थीं, अतः बिना विकल हुए उन्होंने यमराज से सत्यवान के प्राण न लेने की प्रार्थना की। लेकिन यमराज नहीं माने। तब सावित्री उनके पीछे-पीछे ही जाने लगीं। कई बार मना करने पर भी वह नहीं मानीं, तो सावित्री के साहस और त्याग से यमराज प्रसन्न हुए और कोई तीन वरदान मांगने को कहा। सावित्री ने सत्यवान के दृष्टिहीन माता-पिता के नेत्रों की ज्योति मांगी, उनका छिना हुआ राज्य मांगा और अपने लिए 100 पुत्रों का वरदान मांगा। तथास्तु कहने के बाद यमराज समझ गए कि सावित्री के पति को साथ ले जाना अब संभव नहीं। इसलिए उन्होंने सावित्री को अखंड सौभाग्य का आशीर्वाद दिया और सत्यवान को छोड़कर वहां से अंतर्धान हो गए।

आज का राशिफल (16/05/2026) –सपम चानू प्रेमा (खगोल–अंकशास्त्री)

मेष

आपके परिवेश में आमूलचूल परिवर्तन आपको जीवन की नई दिशा दे सकता है। आज का दिन कार्य संबंधी मामलों में शुभ हो सकता है। आपको सकारात्मक परिणाम और भावनात्मक संतुष्टि मिल सकती है। प्रेम के मामले में भी अनुकूल समय है।

वृषभ

इस समय कुछ आर्थिक परेशानियां आ सकती हैं। लगातार होने वाले झगड़ों के कारण जीवनसाथी के साथ संबंध भी अस्थिर बने रहेंगे। खर्चे भी बढ़ सकते हैं, इसलिए उन्हें संतुलित रखने का प्रयास करें।

मिथुन

आज आपके पास शक्ति और दृढ़ संकल्प मौजूद हैं। इन्हें यूं ही व्यर्थ जाने देने या भविष्य के लिए बचाकर रखने के बजाय इनका सदुपयोग करें। इस समय आपकी आय में वृद्धि हो सकती है। आपका मन भी काफी स्थिर रहेगा।

कर्क

अपनी इच्छानुसार चलें और वो करें जो आपको प्रेरित करता है। आपका बॉस आपके काम की सराहना कर सकता है। व्यापारिक सौदों के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा। आप बहुत ऊर्जावान और धन्य महसूस करेंगे।

सिंह

आप किसी ऐसे व्यक्ति के रवैये से निराश हो सकते हैं जो आपकी योजनाओं में सहयोग करने को तैयार नहीं है। काम की प्रगति सामान्य से धीमी हो सकती है। परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों या दोस्तों के साथ आपके कुछ मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं।

कन्या

जब सब कुछ व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य में आ जाएगा, तो इनकार और भ्रम दूर हो जाएंगे। कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। आपको मानसिक तनाव और चिंता का भी सामना करना पड़ सकता है। आपके करियर में भी कुछ बाधाएं आ सकती हैं।

तुला

आपको किसी महत्वपूर्ण क्षेत्र में गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सकती है। कुछ चौंकाने वाले राज़ खुल सकते हैं। आपको व्यापार से लाभ भी हो सकता है। आप स्वस्थ जीवन का आनंद उठा सकते हैं और आपकी आय में भी वृद्धि हो सकती है।

वृश्चिक

चल रहे अनुबंध से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाक्रम होने की संभावना है। ऐसा लग सकता है कि सब कुछ अचानक ठीक हो रहा है। आप अपने अथक परिश्रम के फलस्वरूप सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

धनु

यदि किसी निश्चित समय पर पहुंचना अत्यंत महत्वपूर्ण है, तो अतिरिक्त समय निकालें। कार्यस्थल पर आप अपनी अपेक्षाओं पर खरे न उतरें। इस बीच, आपकी प्रतिष्ठा प्रभावित हो सकती है। सौदे उतने लाभदायक साबित न हों।

मकर

यह समय आपकी अपेक्षा से अधिक शांत और आरामदायक हो सकता है। आसपास कम लोग होने के कारण आपको कम काम करना पड़ेगा। आपको अपने निवेश या व्यवसाय में कुछ नुकसान हो सकता है। आप सामान्य से अधिक भावुक हो सकते हैं।

कुंभ

अन्य लोगों की निर्णय लेने और विशिष्ट व्यवस्थाओं के प्रति प्रतिबद्धता न जताने की अक्षमता इस समय आपको परेशान कर सकती है। आपका स्वास्थ्य और रिश्ते भी सुधर सकते हैं। मित्र, रिश्तेदार या दोस्त हर समय आपका साथ देंगे।

मीन

आज का दिन व्यर्थ जा सकता है, लेकिन उम्मीद है कि अच्छे अर्थों में। आपको अपने मित्रों या सहकर्मियों से पर्याप्त सहयोग नहीं मिलेगा। आपको झगड़े और बहस शुरू करने से बचना चाहिए।

16 मई को मनाएं शनि जयंती, इस प्रकार करें भगवान शनिदेव को प्रसन्न

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार इस वर्ष ज्येष्ठ माह की अमावस्या तिथि 16 मई को है और इस तिथि पर शनि जन्मोत्सव का पर्व मनाया जाएगा। ज्येष्ठ माह की अमावस्या तिथि की शुरुआत 16 मई को प्रातः 05:11 मिनट से शुरू होगी और इसका समापन 17 मई को देर रात 01:30 मिनट पर होगी।

हिंदू धर्म में शनि जयंती का विशेष महत्व है। हिंदू पंचांग के मुताबिक हर साल ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को शनि जयंती मनाई जाती है। हिंदू पंचांग के अनुसार इस वर्ष शनि जयंती 16 मई को मनाई जाएगी। ऐसा माना जाता है कि शनि देव न्याय के देवता है और शनि जयंती के दिन विधि विधान के साथ यदि पूजा अर्चना के बाद व्रत किया जाता है तो भक्तों के कष्ट दूर हो जाते हैं। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर जोधपुर के निदेशक ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि शनि देव सभी भक्तों को उनके कर्मों के अनुसार फल देते हैं। लोग शनि देव को प्रसन्न करने के लिए और किसी भी तरह के कुप्रभाव से बचने के लिए कई प्रकार से आराधना करते हैं। धर्म और ज्योतिष की दृष्टि से सूर्य पुत्र शनिदेव को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। मान्यता है कि इस दिन शनिदेव की विधि पूर्वक उपासना करने से शनिजनित दोषों को कम किया जा सकता है। शनिदेव को न्यायप्रिय व कर्मों के अनुसार फल देने वाला देवता कहा गया है। अच्छे कर्म करने वालों पर शनि देव की सदैव कृपा बनी रहती है और उनकी समस्त मनोकामनाएं पूरी होती है। जबकि बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति को शनिदेव कठोर दंड देते है। शनि देव की कुदृष्टि से व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि शनि जयंती के दिन कुछ उपायों को करने से शनिदेव प्रसन्न होकर अपना आशीर्वाद प्रदान करते हैं तो वहीं कुछ कार्य ऐसे हैं जिनको करने से वे रुष्ट हो सकते हैं, ऐसे कार्यों को इस दिन भूलकर भी न करें। शनि देव सूर्य के पुत्र हैं और मृत्यु के देवता यम के बड़े भाई हैं। शनि देव को न्यायकारी ग्रह माना जाता है। शनि की महादशा अंतर्दशा, साढ़ेसाती एवं ढैया को लोग अशुभ मानते हैं, किंतु यह हमेशा सत्य नहीं है। अनैतिक कार्य करने वाले व्यक्ति को शनि अपनी ढैया, साढ़ेसाती या महादशा में दारुण दुख देते हैं। उन्हें आकस्मिक हानि, शारीरिक विकार धन हानि एवं अपमान सहन करना पड़ता है जबकि नैतिक कार्य करने वाले लोग शनि की महादशा में फर्श से अर्श पर जाते हुए देखे गये हैं। शनि मकर एवं कुंभ राशियों के स्वामी हैं। तुला राशि में उच्च के होते हैं। यदि किसी जातक की कुंडली में शनि अच्छे भाव में है तो उसको जीवन में शनि उन्नति की ओर ले जाएंगे और इस शनि कुंडली में मेष राशि के अथवा शत्रु राशि के हो तो ऐसे व्यक्ति को कष्ट प्रदान करते हैं। शनि से डर उनको लगता है जो गलत कार्य करते हैं। जैसे घूस लेना, गरीबों को सताना, माता-पिता की सेवा ना करना, झूठी गवाही देना, अत्याचार आदि करना। शनि सबके कर्मों का हिसाब रखते हैं।

शनि जयंती तिथि

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार इस वर्ष ज्येष्ठ माह की अमावस्या तिथि 16 मई को है और इस तिथि पर शनि जन्मोत्सव का पर्व मनाया जाएगा। ज्येष्ठ माह की अमावस्या तिथि की शुरुआत 16 मई को प्रातः 05:11 मिनट से शुरू होगी और इसका समापन 17 मई को देर रात 01:30 मिनट पर होगी।

शुभ योग

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि पंचांग के अनुसार 16 मई को शनि जयंती के साथ शनिश्चरी अमावस्या का भी योग बन रहा है, जिससे यह दिन दोगुना फलदायी हो गया है। शनि अमावस्या पर व्रत और शनि देव की पूजा का विशेष महत्व होता है, इसलिए इस बार का संयोग भक्तों के लिए अत्यंत शुभ माना जा रहा है। इसके अलावा इस दिन सौभाग्य योग और शोभन योग भी बन रहे हैं। सौभाग्य योग 15 मई दोपहर 2:21 बजे से 16 मई सुबह 10:26 बजे तक रहेगा, जिसके बाद शोभन योग शुरू होगा और यह 17 मई सुबह 6:15 बजे तक प्रभावी रहेगा। इन दोनों योगों को शुभ कार्यों और पूजा-पाठ के लिए अत्यंत लाभकारी माना जाता है। शनि जयंती के दिन भरणी नक्षत्र प्रातःकाल से लेकर शाम 5:30 बजे तक रहेगा, इसके बाद कृत्तिका नक्षत्र का प्रभाव शुरू होगा। भरणी नक्षत्र के स्वामी शुक्र और देवता यमराज माने जाते हैं, जबकि कृत्तिका नक्षत्र के स्वामी सूर्य और देवता अग्नि हैं। इन सभी संयोगों के कारण इस वर्ष शनि जयंती का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है।

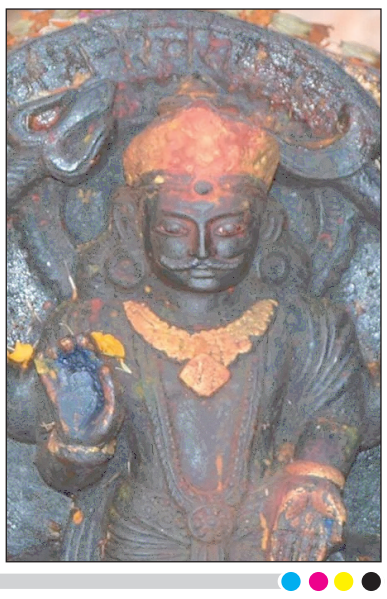

राजस्व विभाग से जुड़े कार्यों को आपसी समन्वय से पूरा करें अधिकारी : डीसी

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बैठक में राजस्व विभाग के अधिकारियों को दिए जरूरी निर्देश

झज्जर, 15 मई। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने जिला के राजस्व विभाग के अधिकारियों की समीक्षा बैठक लेते हुए रजिस्ट्री, जमाबंदी, ततीमा कटिंग, भू नक्शा स्टेटस सहित अन्य राजस्व संबंधी कार्यों की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की। बैठक में उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि राजस्व सम्बंधित कार्यों को निर्धारित समय-सीमा में पूरा किया जाए और किसी भी स्तर पर अनावश्यक विलंब न हो।

इससे पहले वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रोहतक मंडलायुक्त ने जिला अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

वीसी के उपरांत डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि नागरिकों से जुड़े कार्य प्राथमिकता के आधार पर पूरे किए जाएं, ताकि आमजन को समय पर सेवाएं मिल सकें।

डीसी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि नागरिकों को नई प्रक्रिया की जानकारी समय रहते उपलब्ध कराई जाए और आमजन में भ्रम की स्थिति न बनने पाए।

उन्होंने यह भी कहा कि लंबित म्यूटेशन प्रकरणों का शीघ्रता से निपटान सुनिश्चित किया जाए तथा राजस्व रिकॉर्ड को अद्यतन रखा जाए। उन्होंने कहा कि पेपरलेस रजिस्ट्री प्रणाली को प्रभावी ढंग से लागू किया जाए और जमाबंदी से संबंधित मामलों में पारदर्शिता व शुद्धता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा कि किसी भी प्रकार की पेंडेंसी बर्दाश्त नहीं की जाएगी और लापरवाही पाए जाने पर संबंधित अधिकारी की जिम्मेदारी तय की जाएगी।

बैठक में सम्बंधित अधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्रों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस अवसर पर एसडीएम झज्जर रवि मीणा, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, एसडीएम बादली विशाल कुमार, डीआरओ मनबीर सिंह सहित जिला के सभी तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार उपस्थित रहे।

एसआईआर अभियान के तीसरे चरण में 15 जून से 22 सितंबर तक मतदाता सूची का होगा विशेष सत्यापन : डीसी

- आयोग का दायित्व है कि कोई अपात्र व्यक्ति सूची में शामिल न हों तथा कोई पात्र व्यक्ति वंचित न रहे
- एसआईआर का उद्देश्य है मतदाता सूची को त्रुटिरहित बनाना
- बीएलओ घर-घर जाकर मतदाताओं का करेंगे सत्यापन
- बिना जांच व सुनवाई के किसी भी मतदाता का नाम प्रारूप सूची से नहीं हटेगा

झज्जर, 15 मई। डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जिला की मतदाता सूचियों को अधिक पारदर्शी, शुद्ध और अद्यतन बनाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे विशेष गहन पुनरीक्षण अर्थात स्पेशल इंटेंसिव रिविजन अभियान के तीसरा चरण 30 मई से शुरू होकर दिसंबर तक चलेगा। हरियाणा में यह प्रक्रिया 15 जून से 22 सितंबर 2026 तक चलाई जायेगी।

जिला निर्वाचन अधिकारी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि इस तीसरे चरण में हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़ सहित 19 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मतदाताओं के विवरण का सत्यापन किया जाएगा। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 324 तथा जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 के तहत निर्वाचन आयोग को निर्वाचक नामावलियों की तैयारी एवं चुनावों के संचालन का अधिकार प्राप्त है। संविधान के अनुच्छेद 326 के अनुसार केवल भारतीय नागरिक ही मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने के पात्र हैं। आयोग का दायित्व है कि कोई भी अपात्र व्यक्ति सूची में शामिल न हो तथा कोई पात्र नागरिक वंचित न रहे।

उन्होंने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य मतदाता सूची को त्रुटिरहित बनाना तथा मृत, स्थानांतरित अथवा डुप्लीकेट मतदाताओं के नाम हटाकर वास्तविक मतदाताओं का सही रिकॉर्ड तैयार करना है। अभियान के तहत बीएलओ घर-घर जाकर मतदाताओं का सत्यापन करेंगे और आवश्यक दस्तावेजों की जांच करेंगे। हरियाणा में एसआईआर प्रक्रिया 15 जून से 22 सितंबर तक चलेगी। अब विशेष अभियान के माध्यम से मतदाताओं की विस्तृत जांच की जाएगी।

उन्होंने बताया कि आयोग के अनुसार किसी भी मतदाता का नाम बिना उचित जांच एवं सुनवाई का अवसर दिए प्रारूप सूची से नहीं हटाया जाएगा। यदि कोई व्यक्ति निर्वाचन पंजीकरण अधिकारी (ईआरओ) के निर्णय से असंतुष्ट होता है, तो वह जिला मजिस्ट्रेट एवं बाद में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के समक्ष अपील कर सकेगा। इसके अतिरिक्त आयोग ने स्पष्ट किया कि राज्य के बाहर से स्थानांतरित होकर आने वाले नागरिकों को मतदाता पंजीकरण के लिए प्रपत्र-6 के साथ एक अतिरिक्त घोषणा-पत्र भी जमा करना होगा।

राष्ट्रीय राजमार्ग-334 बी के साथ अतिरिक्त नियंत्रित क्षेत्र घोषित, बिना अनुमति निर्माण व प्लॉटिंग पर होगी सख्त कार्रवाई

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 15 मई। हरियाणा सरकार के नगर एवं ग्राम आयोजना विभाग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-334 बी (झज्जर से चरखी दादरी मार्ग) के साथ लगते क्षेत्र को अतिरिक्त नियंत्रित क्षेत्र घोषित किया गया है। इस नियंत्रित क्षेत्र में गांव महमूदपुर माजरा, जहाजगढ़, तामसपुरा, फोर्टपुरा, इस्लामगढ़, बीड छुछकवास, अछेज, पहाड़ीपुर, गोधरी तथा मातनहेल की राजस्व संपदा को शामिल किया गया है।

जिला नगर योजनाकार अंजू ने जानकारी देते हुए बताया कि उक्त क्षेत्र नियंत्रित क्षेत्र घोषित होने के बाद यहां किसी भी प्रकार की वाणिज्यिक, औद्योगिक, शैक्षणिक, आवासीय अथवा अन्य लाभकारी गतिविधि शुरू करने से पहले महानिदेशक, नगर एवं ग्राम आयोजना विभाग, हरियाणा, चंडीगढ़ से भूमि उपयोग परिवर्तन (सीएलयू) की अनुमति लेना अनिवार्य होगा।

उन्होंने स्पष्ट किया कि नियंत्रित क्षेत्र घोषित होने के बाद यदि कोई व्यक्ति बिना अनुमति के निर्माण कार्य या प्लॉटिंग करता है तो उसे अवैध माना जाएगा। ऐसे मामलों में द हरियाणा अधिसूचित सडक़ एवं अनियमित विकास का नियंत्रित क्षेत्र प्रतिबंधित अधिनियम, 1963 की धाराओं के तहत सख्त कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

जिला नगर योजनाकार ने बताया कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विभाग की आधिकारिक वेबसाइट नगर एवं ग्राम आयोजना विभाग, हरियाणा पर उपलब्ध है।

उन्होंने आमजन से आह्वान किया कि वे उक्त घोषित नियंत्रित क्षेत्र में किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य शुरू करने से पहले जिला नगर योजनाकार कार्यालय, लघु सचिवालय फेज-2, प्रथम तल, झज्जर से किसी भी कार्य दिवस में आवश्यक जानकारी के लिए संपर्क कर सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता के लिए आपसी समन्वय से कार्य करें अधिकारी : डीसी

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत चल रहे कार्यक्रमों को लेकर अधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक

झज्जर, 15 मई। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में शुक्रवार को लघु सचिवालय सभागार में जिलाभर में स्वच्छ भारत मिशन (शहरी व ग्रामीण) कार्यक्रम को लेकर बैठक आयोजित की गई। बैठक में डीएमसी अभिनव सिवाच और जिला परिषद के सीईओ मनीष फोगाट ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन के तहत चलाई जा रही गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छ जिले के निर्माण के लिए सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करें। इसके लिए प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अधिकारियों को भी निर्देश दिए गए। साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में वेस्ट प्रोसेसिंग प्लांट के लिए भूमि चिन्हित की जाए।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट) नियमों की प्रभावी पालना सुनिश्चित करना सभी विभागों की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि स्वच्छता व्यवस्था को बेहतर बनाने, कचरे के वैज्ञानिक निस्तारण तथा पर्यावरण संरक्षण को लेकर सरकार और न्यायालय के निर्देशों का गंभीरता से पालन किया जाए।

उन्होंने अधिकारियों से कहा कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में कचरा प्रबंधन से संबंधित कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए तथा जहां भी कमियां हैं उन्हें निर्धारित समयावधि में दूर किया जाए। डीसी ने संबंधित विभागों को कूड़ा संग्रहण, डोर-टू-डोर कलेक्शन, कचरे के पृथक्करण एवं निस्तारण व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि साफ-सफाई व्यवस्था में किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए तथा आमजन को भी स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए अभियान चलाए जाएं। उन्होंने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को स्वच्छता को लेकर पेंटिंग, स्वच्छता रैली व अन्य जागरूकता गतिविधियां बढ़ाने के निर्देश दिए। साथ ही सिविल सर्जन को स्वास्थ्य संस्थानों में बायो वेस्ट सेग्रीगेशन की दिशा में प्रभावी रूप से कार्य किये जाएं।

बेटियों के शिक्षित होने से दो परिवारों का भला : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

- लिंगानुपात में सुधार के लिए निरंतर जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत- बोले डीसी
- डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास विभाग से जुड़े अधिकारियों की बैठक में दिए जरूरी निर्देश

झज्जर, 15 मई। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि बेटी बचाओ बेटी पढाओ अभियान व बेटियों की सुरक्षा को लेकर सरकार सजग व सतर्क है, हमें बच्चियों को मान सम्मान देने के साथ-साथ उनका जन्म दिन भी पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाना चाहिए।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल शुक्रवार को जिला स्तरीय स्टैंडिंग कमेटी बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। बैठक के दौरान नोडल अधिकारी डॉ संदीप दलाल ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के अंतर्गत चलाए जाने वाले कार्यक्रमो की विस्तार से जानकारी सांझा की।

डीसी ने कहा कि बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान एक राष्ट्रीय अभियान है, आमजन के सहयोग से लिंगानुपात शत प्रतिशत करने के उद्देश्य से चलाए जा रहे इस कार्यक्रम के सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। जिला झज्जर में लिंगानुपात को शत प्रतिशत तक पहुंचाना है। यह कार्य तभी संभव होगा, जब सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय और टीम भावना से कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि जिला में पीसीपीएनडीटी एक्ट और एमटीपी एक्ट की कड़ाई से पालना सुनिश्चित की जाए, अल्ट्रा साऊंड केंद्रों की निगरानी के साथ ही वहां आसपास लगे सीसीटीवी की भी निरंतर मॉनिटरिंग की जाए। उन्होंने कहा कि जिन गांवों में लिंगानुपात कम है, ऐसे गांवों में जागरूकता अभियान चलाकर आमजन को जागरूक किया जाए। साथ ही धार्मिक कार्यक्रमों में भी बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का संदेश दिया जाए। एमटीपी किट को लेकर मेडिकल स्टोर की नियमित जांच ड्रग कंट्रोल विभाग द्वारा की जाए। जागरूकता कार्यक्रमों में संबंधित गांवों की उन बेटियों को आमंत्रित किया जाए, उन्होंने खेल, शिक्षा सहित अन्य क्षेत्रों में उपलब्धि हासिल की है।

यह अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर डीएमसी अभिनव सिवाच, एसडीएम झज्जर रवि मीणा, सीईओ जिला परिषद मनीष फौगाट, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, एसडीएम बादली विशाल कुमार, एसीपी शमशेर सिंह व सुरेंद्र सिंह सिविल सर्जन डॉ मंजू कादयान, डीडीपीओ निशा तंवर नोडल अधिकारी पीसी पीएनडीटी डॉ संदीप दलाल, डीपीओ सपना होलकर सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

जल संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत : डीसी

जल संचय -जन भागीदारी 2.0 के लक्ष्यों को समयबद्ध पूरा करें विभाग
डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने वीसी उपरांत अधिकारियों की बैठक में की जल संचय - जनभागीदारी 2-0 कार्यक्रम की समीक्षा

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 15 मई। डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने कहा कि जल संचय जनभागीदारी अभियान 2-0 का मुख्य उद्देश्य जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन तथा सिंचाई व्यवस्था को और अधिक मजबूत करना है। ऐसे में अधिकारी आमजन को इस अभियान से जोड़ते हुए जलसंरक्षण की दिशा में कार्य करें।

डीसी शुक्रवार को सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग हरियाणा के एसीएस अनुराग अग्रवाल की वीसी उपरांत अधिकारियों की बैठक में जल शक्ति और जल संचय जनभागीदारी 2.0 अभियान की प्रगति की समीक्षा कर रहे थे।

उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी संबंधित विभाग आपसी समन्वय के साथ निर्धारित लक्ष्यों को समयबद्ध पूरा करें। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है और इसे जन-आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल ने अधिकारियों से कहा कि जिले में वर्षा जल संचयन, तालाबों के पुनर्जीवन, चेक डैम, सोक पिट, रेन वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर तथा अन्य जल संरक्षण कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाए। उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में चिन्हित कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग की जाए और प्रगति रिपोर्ट समय-समय पर प्रस्तुत की जाए। उन्होंने कहा कि अभियान के तहत किए गए कार्य की रिपोर्ट को भी पोर्टल पर अपलोड करें।

बैठक में डीसी ने जनभागीदारी पर विशेष बल देते हुए कहा कि आमजन, स्वयं सहायता समूहों, ग्राम पंचायतों, शैक्षणिक संस्थानों व सामाजिक संगठनों को अभियान से जोड़ा जाए, ताकि जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़े और स्थायी परिणाम सामने आएं। उन्होंने कहा कि जल बचत के लिए व्यवहार में बदलाव लाना भी उतना ही जरूरी है, जितना संरचनात्मक कार्य।

डीसी ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि प्रचार-प्रसार गतिविधियों को और प्रभावी बनाया जाए, ताकि अधिक से अधिक लोग जल संचय के महत्व को समझें और अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाएं। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि लापरवाही किसी भी स्तर पर स्वीकार नहीं की जाएगी और सभी अधिकारी अपने-अपने दायित्वों का गंभीरता से निर्वहन करें। बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने अभियान के तहत अब तक किए गए कार्यों की जानकारी दी तथा आगामी कार्य योजना पर भी चर्चा की।

यह अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट, सिंचाई विभाग के अधीक्षण अभियंता सतीश जनावा, एक्सईएन खिवलेश भारद्वाज, पंचायतीराज के एक्सईएन नरेंद्र गुलिया, सिंचाई विभाग के एसडीओ हरपाल सिंह सहित संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

समाधान शिविर की शिकायतों का समयबद्ध निपटान जरूरी : डीसी

परिवहन विशेष न्यूज

- समाधान शिविर की साप्ताहिक समीक्षा बैठक में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने दिए निर्देश

झज्जर, 15 मई। डीसी स्वप्निल रविंद्र ने कहा कि आमजन से जुड़ी प्रत्येक समस्या का समयबद्ध निपटान करना प्रशासन की पहली प्राथमिकता है। ऐसे में अधिकारी जनसमस्याओं का तत्परता से निपटारा करें। डीसी शुक्रवार को समाधान शिविर की साप्ताहिक समीक्षा बैठक में अधिकारियों को जरूरी निर्देश दे रहे थे।

डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने बताया कि जिला में आयोजित हो रहे समाधान शिविरों में अभी तक कुल 6013 शिकायत प्राप्त हुई हैं इनमें से केवल 197 पेंडिंग हैं। पेंडिंग शिकायतों का निवारण प्राथमिकता के आधार पर किया जा रहा है।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे समाधान शिविर, सीएम विंडो, जनसंवाद आदि माध्यमों से प्राप्त सभी शिकायतों की रिपोर्ट निर्धारित समय सीमा में पोर्टल पर अपलोड करना सुनिश्चित करें। उन्होंने जनस्वास्थ्य, पुलिस, सिंचाई, पंचायत, राजस्व, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, एचएसवीपी, पीडब्ल्यूडी तथा शिक्षा विभाग से जुड़ी समस्याओं का विभागवार आकलन करते हुए स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी विभाग समस्याओं का शीघ्र समाधान सुनिश्चित करें तथा समय पर पोर्टल पर एटीआर अपलोड करें।

इन विभागों के अधिकारी रहे मौजूद

इस अवसर पर सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, एसडीएम बादली विशाल कुमार, डीआरओ मनबीर सिंह, सहित विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

इंस्पेक्टर अमरेंद्र की सक्रियता से ऑल इज वेल शिवली, गो - मांस तस्कर गिरोह का इनामी राजू बंजारा गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां देहात में अपराध नियंत्रण की दिशा में घटनाओं की रोकथाम व खुलासे हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस द्वारा गो मांस तस्कर मो.जुबेर अंसारी पुत्र मो. रिजवान, निवासी 98/179 गोरा कब्रिस्तान बेकनगंज थाना बेकनगंज कानपुर नगर, आसिफ पुत्र शकील निवासी 98/179 मोहम्मदी अस्पताल के पास रेल पटरी बेकनगंज कानपुर नगर को 100 किग्रा0 गोमांस स्कूटी ले जाते हुये पकड़कर जेल भेजने के बाद अब उसके फरार साथी 15000 के इनामी को भी गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की गई है। पुलिस के अनुसार औरैया से लाने के बाद उपरोक्त गो मांस को जेल भेजे गए आरोपी कानपुर बेचने के लिये ले जा रहे थे ,लेकिन निष्पक्ष और पारदर्शी कार्य शैली के अमरेंद्र बहादुर की सक्रियता के फल स्वरुप वे कानून के शिकंजे में फंसने से बच नहीं सके थे।

पुलिस विभाग के माध्यम से जन सेवा के कर्तव्य मार्ग पर सफलता पूर्वक अग्रसर हर तरह के अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई में भी अग्रणी लोक हित में अपनी धुन के पक्के इंस्पेक्टर अमरेंद्र बहादुर सिंह की अगुवाई वाली टीम ने फरार चल रहे 15 हजार रुपये के ईनामिया अभियुक्त राजू बंजारा पुत्र लालाराम निवासी ग्राम रामपुर रामसहाय थाना अछल्दा जनपद औरैया को भी मुखबिर खास की सूचना पर भेवान नहर पुल से केशरी निवादा जाने वाले मार्ग पर गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की।

कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ लगातार सफल मोर्चा खोले जुझारू तेवरों वाले कठोर परिश्रमी इंस्पेक्टर अमरेंद्र बहादुर सिंह ने बताया कि 100 किलो गोमांस गिरफ्तार जेल भेजे जा चुके कल्लू कुरैशी पुत्र हसीन कुरैशी एवं जुनैद का यह सहयोगी साथी राजू बंजारा पुत्र लालाराम निवासी ग्राम रामपुर रामसहाय थाना अछल्दा जनपद औरैया फरार चल रहा था, जिस पर ₹15000 का इनाम भी घोषित किया गया था। इंस्पेक्टर अमरेंद्र बहादुर सिंह के नेतृत्व में 15000 के इनामी गौ मांस तस्कर राजू बंजारा पुत्र लालाराम को गिरफ्तार करने वाली टीम में सब इंस्पेक्टर शिवेन्द्र कुमार वर्मा , हेड कांस्टेबल मोहित कुमार ,कांस्टेबल अभिषेक और रिक्रूट महिला कांस्टेबल ज्योति आदि शामिल रहे।

गयाजी में अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ शुरू हुई मेडिसिटी हॉस्पिटल पॉलीक्लिनिक सेवा

पेट,आंत एवं लिवर रोगों के विशेषज्ञ उपचार के साथ जनरल फिजिशियन की भी सुविधा

परिवहन विशेष न्यूज

गयाजी। शहर के जी.बी. रोड स्थित विवेक जांच घर के बगल में शुरू हुई मेडिसिटी हॉस्पिटल पॉलीक्लिनिक में मरीजों को अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। अस्पताल प्रबंधन के अनुसार यहां अनुभवी चिकित्सकों द्वारा विभिन्न गंभीर बीमारियों का परामर्श एवं उपचार किया जा रहा है। मरीजों को एक ही स्थान पर सामान्य रोगों से लेकर पेट, आंत एवं लिवर संबंधी बीमारियों की विशेषज्ञ चिकित्सा सुविधा मिल रही है।

समय पर जांच और उपचार से गंभीर बीमारियों से बचाव संभव : डॉ. टी. शर्मा

पेट, आंत एवं लिवर रोग तथा एंडोस्कोपी विशेषज्ञ डॉ. टी. शर्मा ने बताया कि आधुनिक तकनीक और अनुभवी चिकित्सकों की टीम के माध्यम से बेहतर स्वास्थ्य सेवा देना उनका मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में अनियमित खानपान, तनाव और बदलती जीवनशैली के कारण पेट एवं लिवर संबंधी बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं। लगातार गैस, एसिडिटी, पेट दर्द, भूख नहीं लगना, उल्टी, कब्ज, दस्त या लिवर से जुड़ी समस्याओं को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। समय पर जांच एवं उचित उपचार से गंभीर बीमारियों से बचा जा सकता है।

अनुभवी चिकित्सकों की टीम दे रही बेहतर स्वास्थ्य सेवा

पॉलीक्लिनिक में डॉ. गुंजन कुमार जनरल फिजिशियन एवं क्रिटिकल केयर विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। उन्होंने एमबीबीएस कोलकाता, एमडी आईएमएस बीएचयू तथा पीडीसीसी क्रिटिकल केयर की पढ़ाई की है और एम्स नई दिल्ली में भी कार्य कर चुके हैं। वे मधुमेह, उच्च रक्तचाप, थायराइड, फेफड़ा, हृदय, गुर्दा एवं संक्रमण संबंधी बीमारियों का इलाज कर रहे हैं। अस्पताल प्रबंधन ने बताया कि मरीजों को बेहतर एवं सुलभ स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने के लिए पॉलीक्लिनिक में आधुनिक जांच एवं उपचार की सुविधाएं निरंतर बढ़ाई जा रही हैं।

ब्रिक्स बैठक के दौरान पश्चिम एशिया संकट पर ईरान ने जताई चिंता, अमेरिका की भूमिका पर उठाए सवाल

संगिनी घोष

ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने ब्रिक्स बैठक के इतर पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव को लेकर चिंता व्यक्त की और कहा कि क्षेत्र में अमेरिका की भूमिका एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुंच चुकी है।

उनका यह बयान ऐसे समय आया है जब पश्चिम एशिया में सुरक्षा और कूटनीतिक तनाव लगातार बढ़ रहे हैं।

क्षेत्रीय स्थिरता पर चिंता

ईरान ने कहा कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष और सैन्य तनाव क्षेत्रीय शांति और वैश्विक आर्थिक स्थिरता को प्रभावित कर सकते हैं।

अमेरिका की नीतियों पर सवाल

अराघची ने संकेत दिया कि क्षेत्र में अमेरिका की नीतियों और हस्तक्षेप को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सवाल उठ रहे हैं।

ब्रिक्स मंच पर वैश्विक चिंता

ब्रिक्स देशों के बीच हुई चर्चा में बहुपक्षीय सहयोग, संवाद और शांतिपूर्ण समाधान पर जोर दिया गया।

ऊर्जा और व्यापार पर असर की आशंका

विशेषज्ञों का मानना है कि पश्चिम एशिया में लंबे समय तक तनाव बने रहने से वैश्विक ऊर्जा बाजार और व्यापार मार्ग प्रभावित हो सकते हैं।

कूटनीतिक समाधान पर जोर

ईरान ने संघर्ष को और बढ़ने से रोकने के लिए क्षेत्रीय सहयोग और कूटनीतिक वार्ता की आवश्यकता बताई।

ऐसे देखें तो पश्चिम एशिया का संकट अब केवल क्षेत्रीय मुद्दा नहीं रह गया, बल्कि इसका असर वैश्विक राजनीति, ऊर्जा और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ सकता है।

मुख्य बिंदु

* अब्बास अराघची ने ब्रिक्स बैठक के दौरान बयान दिया
* पश्चिम एशिया संघर्ष पर चिंता व्यक्त
* अमेरिका की भूमिका पर सवाल
* कूटनीतिक समाधान और संवाद पर जोर
* ऊर्जा बाजार और व्यापार पर असर की आशंका
* ब्रिक्स देशों ने बहुपक्षीय सहयोग पर दिया बल

आज की ये शाम-राही जी के नाम" : 90वें जन्मदिवस पर साहित्यकार बालस्वरूप राही का अभिनंदन

डॉ. शंभु पंवार नई दिल्ली, 15 मई।

कृष्णादित्य परंपरा परिवार एवं अक्षर आंगन मंच के संयुक्त तत्वावधान में द्वारका स्थित क्रिएटिव अनलॉक सभागार में हिंदी साहित्य जगत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं वरिष्ठ कवि बालस्वरूप राही के 90वें जन्मदिवस पर गरिमामय समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ साहित्यकार लक्ष्मी शंकर वाजपेई, ममता किरण, राजेन्द्र निगम राज एवं इंदु राज निगम ने किया। समारोह का शुभारंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ। पारंपरिक रूप से तिलक एवं आरती कर राही जी का जन्मदिवस मनाया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण स्वयं राही जी द्वारा अपनी चर्चित रचनाओं का सस्वर पाठ रहा, जिसने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस दौरान उनकी सुपुत्री द्वारा साझा किए गए पारिवारिक संस्मरणों ने माहौल को भावुक बना दिया।तत्पश्चात वरिष्ठ साहित्यकारों एवं शुभचिंतकों ने राही जी का सम्मान किया। इस अवसर पर साहित्य संगम मंच की संस्थापिका शिखा खुराना, अध्यक्ष सुनीला नारंग, उपाध्यक्ष अलका गर्ग ने राही जी को अंग वस्त्र ओर श्रीमद्भागवत गीता की प्रति भेंट कर सम्मान किया। समारोह मेंअद्विक पब्लिकेशन के संस्थापक अशोक गुप्ता, वरिष्ठ साहित्यकार वीणा अग्रवाल, समाजसेविका एवं साहित्यकार डॉ.अंजू क्वात्रा ,शकुन मित्तल, लोकेश चौधरी सहित काफी संख्या में दिल्ली एवं एनसीआर से आए साहित्यकारों, कवियों एवं साहित्य प्रेमियों ने राही जी के दीर्घ साहित्यिक योगदान को नमन करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं। समारोह का समापन केक कटिंग, सामूहिक छायाचित्र एवं जलपान के साथ आत्मीय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सपा सांसद की अभद्र टिप्पणी के विरोध में भाजपा लखनऊ महानगर एवं जिला महिला मोर्चा का प्रदर्शन

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ, 15 मई 2026। आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के प्रति समाजवादी पार्टी के सांसद द्वारा की गई अभद्र एवं अमर्यादित टिप्पणी के विरोध में भारतीय जनता पार्टी लखनऊ महानगर एवं जिला महिला मोर्चा द्वारा शुक्रवार को कलेक्ट्रेट कार्यालय पर जोरदार धरना-प्रदर्शन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भाजपा महिला मोर्चा की पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं देशभक्त महिलाएं उपस्थित रहीं। प्रदर्शन के दौरान कार्यकर्ताओं ने सपा सांसद के विरुद्ध नारेबाजी करते हुए कड़ी कार्रवाई की मांग की। पूर्व महापौर संयुक्ता भाटिया कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी देश के 140 करोड़ देशवासियों की आशा और विश्वास के प्रतीक हैं। उनके खिलाफ अपमानजनक भाषा का प्रयोग करना केवल प्रधानमंत्री का ही नहीं बल्कि पूरे देश का अपमान है। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी लगातार महिलाओं, सनातन संस्कृति और राष्ट्र की भावनाओं का अपमान करती रही है, जिसे देश की जनता कभी स्वीकार नहीं करेगी।

महिला मोर्चा अध्यक्ष सीता नेगी ने कहा कि भाजपा की मातृशक्ति ऐसे किसी भी व्यक्ति को मुंहतोड़ जवाब देने का कार्य करेगी जो देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री के सम्मान को ठेस पहुंचाने का प्रयास करेगा। महिला मोर्चा लोकतांत्रिक तरीके से अपना विरोध दर्ज करा रहा है और सपा सांसद से सार्वजनिक माफी की मांग करता है।

कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं ने एक स्वर में कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में देश निरंतर विकास की ओर अग्रसर है और विपक्ष की इस प्रकार की अभद्र राजनीति को जनता आगामी चुनावों में करारा जवाब देगी।

धरना-प्रदर्शन के उपरांत कार्यकर्ताओं ने जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर संबंधित सांसद के खिलाफ उचित कार्रवाई की मांग की।

हाईकोर्ट द्वारा धार भोजशाला का फैसला सत्यता को पुनर्स्थापना का ऐतिहासिक फैसला , आमजन में हर्ष और उनके विचार।

स्वतंत्र लेखक व पत्रकार - हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

धार मध्यप्रदेश की भोजशाला सरस्वती मंदिर था। इन्दौर हाईकोर्ट की खंडपीठ ने यह ऐतिहासिक फैसला सुनाया। भोजशाला मूल रुप से एक हिन्दू मंदिर है, जहां ऐतिहासिक तत्वों, पुरातात्विक साक्ष्यों और प्राचीन संरचना के अध्ययन के मुख्य आधार पर यह फैसला दिया गया है। राम मंदिर के अगर कोई सनातन संस्कृति गौरवशाली इतिहास की सत्यता को पुनर्स्थापना का ऐतिहासिक पक्ष आज के दिन मजबूत हुआ। भोजशाला की संरचना स्तंभ शिलालेख और स्थापत्य कला यही कहे रही है की यहां शिक्षा की देवी मां सरस्वती का मुख्य मंदिर रहा है। उपासना की परम्परा का आधार के साथ साथ धार्मिक प्रतीक और शिल्प इसे मंदिर ही सिद्ध करते हैं। ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार मंदिर ही मान रहे हैं। आज मां वाग्देवी की कृपा से राजा भोज की नगरी आज से भोजशाला सरस्वती मंदिर के नाम से जाना जाएगा।

भोजशाला पर हाईकोर्ट के फैसले पर वैचारिक चिंतन आमजन की राय.....

हिंदुओं की आस्था के केंद्र भोजशाला पर माननीय उच्च न्यायालय का साक्ष्य सम्मत फैसला , हमारी सनातन संस्कृति के गौरव की पुनर्स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है सामाजिक सदभाव एवं संप्रभुता बनाए रखने के लिए न्यायालय के प्रति आभार।

सचिन जैन ओज्स वैली श्रद्धानंद मार्ग छावनी इन्दौर

' सत्य सनातन की विजय

इंदौर हाई कोर्ट का भोजशाला को लेकर फैसला केवल एक न्यायिक निर्णय नहीं बल्कि सत्य सनातन संस्कृति की विजय हुई है। भोजशाला में सारे वे प्रमाण मिले हैं जो सनातन संस्कृति से जुड़े हैं सूर्य संस्कृत के श्लोक तथा हवन कुंड जैसे प्रमाण जो प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में न्यायालय के सामने प्रस्तुत किए गए न्यायालय ने प्रस्तुत तथ्यों का सूक्ष्म विश्लेषण किया और इसे , सनातन संस्कृति का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल घोषित किया। इस निर्णय से भोजशाला पर हिंदुओं का अधिकार तो अपने आप होगा इसके साथ ही वाग्देवी सरस्वती की मूर्ति लंदन से लाने का मार्ग भी प्रशस्त हुआ है। आज का दिन हमारी संस्कृति और सनातन की विजय का दिवस है।

राष्ट्रवादी विचारक - मनोहर मंजुल

पिपल्या बुजुर्ग महेश्वर,

' मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय की इंदौर पीठ ने धार की ऐतिहासिक भोजशाला के संबंध में एक महत्वपूर्ण रुख अपनाया है। कोर्ट ने इसे केवल एक स्मारक न मानकर, इसके धार्मिक और ऐतिहासिक स्वरूप को स्वीकार किया । कोर्ट ने एएसआई के वैज्ञानिक सर्वेक्षण के आधार पर माना कि यह मूल रूप से वाग्देवी (माता सरस्वती) का मंदिर है। संरचना की दीवारों पर खुदे श्लोक और नक्काशीदार खंभे इसके मंदिर होने के पुख्ता प्रमाण देते हैं। हिंदू पक्ष के लिए यह सदियों से ज्ञान की देवी का स्थान रहा है, जिसे राजा भोज ने संस्कृत अध्ययन के केंद्र के रूप में स्थापित किया था।कोर्ट का यह रुख स्पष्ट करता है कि किसी भी विवादित स्थल का समाधान ऐतिहासिक तथ्यों और वैज्ञानिक साक्ष्यों के आधार पर ही संभव है, जिससे इसकी पहचान और पवित्रता को संरक्षित किया जा सके।संक्षेप में, हाई कोर्ट के इस दृष्टिकोण ने भोजशाला के गौरवशाली अतीत और इसकी धार्मिक पहचान को कानूनी और ऐतिहासिक मान्यता प्रदान करने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है।अब जब भारतीय न्यायालय ने इसे आधिकारिक रूप से मंदिर मान लिया है, तो भारत सरकार यूनेस्को कन्वेंशन और द्विपक्षीय वार्ताओं के माध्यम से ब्रिटेन पर इस सांस्कृतिक धरोहर को उसके मूल स्थान पर लौटाने के लिए दबाव बना सकती है।

भगवानदास छरिया सोमानी नगर इन्दौर

"सत्य हमेशा विजयी होता है"

ऐतिहासिक साक्ष्यों की वजह से अंततः धार की भोजशाला हिंदुओं का मन्दिर घोषित हुई। दशकों पूर्व आक्रान्ताओं ने जिस मन्दिर का स्वरूप बिगाड़ कर उसे मस्जिद घोषित कर रखा था उसे हाई कोर्ट की एक बेंच ने लम्बी सुनवाई के बाद वाग्देवी का समर्पित मन्दिर कह कर उसे संस्कृत शिक्षा का बड़ा केंद्र भी माना। इसने लाखों हिंदुओं के विश्वास और भक्ति को बरकरार रखा है जिसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं।

- नरेश कानूनगो 'शोभना', राजाराम नगर, देवास, म.प्र.,

"पत्थर सच्चाई उगलते हैं तो सच्चाई सामने आई जाती है।

भोजशाला में कमाल मौला को चाहने वाले भी भूल चुके थे कि यह धारा यह स्थान किसी शिव शक्ति का सदियों से स्थान रहा है । इतिहास में गड़े हुए पत्थर जब सच्चाई उगलते हैं तो वह सच्चाई सामने आई जाती है । ऐसे कई स्थान है जहां पहले से ही शिव शक्ति के साथ हमारे आराध्य देवी देवताओं की मुर्तियां निकल चुकी है उन स्थानों से जहां पर कभी किसी विधर्मियों ने अपने धर्म के प्रतीक चिह्न को लगा दिए थे । भोजशाला से शक्ति निकाल कर आई है अतित की ध्वनियां समय की पदचाप पहचानती हुई पुरातात्विक साक्ष्य के साथ न्याय की आस में लगातार इंतजार करती रही लेकिन सच्चाई तो सच्चाई के रूप में उजागर हो गई । यह सत्य सनातन की आने वाली केवल पदचाप है अभी तो सत्य सनातन का आना शेष बाकी है ।

मां वाग्देवी की मूर्ति लाने के लिए अब लंदन का मार्ग और सरल हो गया क्योंकि विगत कई वर्षों से हम जिस गुलामी के साए में जी रहे थे । आज हमारी कानून की धाराएं जो कलम से लिखी गई थी । आज इसी कलम के माध्यम से न्याय के मार्ग पर चलते हुए हमें सफलता प्राप्त हुई । अब यह भोजशाला सनातन धर्म संस्कृति का केंद्र बन गई है । यह कहना कभी गलत नहीं होगा ।

प्रकाश हेमावत रतलाम मध्यप्रदेश

"भोजशाला धार हाई कोर्ट का निर्णय बहुत ही सराहनीय निर्णय रहा इसमें सभी हिंदू पक्ष की दलील की जो इतिहास प्रमाणित थी न्यायपालिका ने बहुत ही साहसिक फैसला दिया जो हकीकत में हिंदू पक्ष का ही था सनातन हिंदू सम्राट राजा भोज के इतिहास से छेड़छाड़ कर कब्जा किया हुआ था यह इसको हाई कोर्ट ने सिद्ध कर दिया यह सनातन हिंदू धर्म की जय हो

राम गुर्जर उपाध्यक्ष सकल गुर्जर महासभा इंदौर मध्य प्रदेश।।

सभी मध्यप्रदेश के आमजन व वरिष्ठजनों की राय भोजशाला धार मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक फैसले पर विचार प्रेरित है।।

प्रेषक संकलन - स्वतंत्र लेखक व पत्रकार हरिहर सिंह चौहान इन्दौर के द्वारा प्रेषित संकलन

बचपन, पुस्तकों और कल्पना की दुनिया

● डॉ. विजय गर्ग

आज का बच्चा मोबाइल, टेलीविजन और डिजिटल स्क्रीन से घिरा हुआ है। उसकी दुनिया में एनीमेशन, छोटे वीडियो और तत्काल मनोरंजन ने बड़ा स्थान बनाया है। लेकिन इस तकनीकी चमक-दमक में पुस्तकों की महत्वता कम नहीं हुई है। किताबें आज भी मानव सोच को गहराई प्रदान करती हैं। स्क्रीन बच्चे को केवल तस्वीर दिखाती है, लेकिन किताब उसके दिमाग में चित्र बनाती है। जब बच्चा कहानी पढ़ता है तो वह अपने मन में पात्रों के चेहरे, पहाड़ों के रंग, जंगलों की आवाजें और आकाश की विशालता स्वयं रचता है। यही कल्पना की वास्तविक शक्ति है।

बचपन मानव जीवन का वह सुखद दौर होता है, जब हर चीज़ में नई रोशनी, नया रंग और नई उड़ान छिपी होती है। इस उम्र में बच्चे की सोच मिट्टी की तरह नरम हो जाती है, जिसे जैसे-जैसे गूंथ लिया जाता है, वैसा ही रूप ले लेता है। बचपन में सुनी गई कहानियाँ, पढ़ी गई पुस्तकें एवं देखे गए सपने मनुष्य के पूरे जीवन के विचारों, सुभावों एवं दृष्टान्तों को प्रभावित करते हैं। किताबें केवल कागज नहीं होतीं, बल्कि बच्चों के मन को खोलने वाली खिड़कियाँ होती हैं। इनके माध्यम से बच्चा एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करता है जहाँ कल्पना की कोई सीमा नहीं होती।

आज का बच्चा मोबाइल, टेलीविजन और डिजिटल स्क्रीन से घिरा हुआ है। उसकी दुनिया में एनीमेशन, छोटे वीडियो और तत्काल मनोरंजन ने बड़ा स्थान बनाया है। लेकिन इस तकनीकी चमक-दमक में पुस्तकों की महत्वता कम नहीं हुई है। किताबें आज भी मानव सोच को गहराई प्रदान करती हैं। स्क्रीन बच्चे को केवल तस्वीर दिखाती है, लेकिन किताब उसके दिमाग में चित्र बनाती है। जब बच्चा कहानी पढ़ता है तो वह अपने मन में पात्रों के चेहरे, पहाड़ों के रंग, जंगलों की आवाजें और आकाश की विशालता स्वयं रचता है। यही कल्पना की वास्तविक शक्ति है।

कल्पना मानव प्रगति की जड़ है। जो मनुष्य कल्पना कर सकता है, वह नई खोज भी कर सकता है। हर वैज्ञानिक, कवि, लेखक और कलाकार के भीतर एक बचपन छिपा होता है, जिसने कभी किताबें पढ़ते हुए सपने देखे हैं। जूल वर्न की कहानियों को पढ़ने से कई बच्चों ने अंतर्ज्ञान यात्रा का सपना देखा। पंचायतंत्र, अकबर-बीरबल, तेनाली राम और लोक कथाओं ने बच्चों को सिनप, हास्य और जीवन की समझ दी। कहानियां केवल मनोरंजन नहीं करतीं, बल्कि मनुष्य के अंदर मानवता को जागृत करती हैं।

बचपन और किताबों का रिश्ता बहुत ही पवित्र है। जब माँ बच्चे को रात में कहानी सुनाती हैं, तो वह सिर्फ शब्द नहीं सुन रहा होता, बल्कि प्यार, सुरक्षा और कल्पना की दुनिया में प्रवेश कर रहा होता है। दादा-दादी की कहानियाँ बच्चों को उनकी संस्कृति से जोड़ती हैं। इन कहानियों के माध्यम से बच्चा अच्छे आदमी की पहचान करता है। कहानियों के नायक बच्चों को साहस, ईमानदारी और सच्चाई की ओर प्रेरित करते हैं।

पढ़ने की आदत बच्चे के दिमाग को केंद्रित करती है। किताबें बच्चों में धैर्य पैदा करती हैं। जहां स्क्रीन तुरंत सब कुछ दिखाती है, वहीं किताब बच्चे को सोचने और समझने का समय देती है। यही कारण है कि जो बच्चे पढ़ने के शौकीन होते हैं, वे अक्सर दूसरों की तुलना में विचारों में अधिक गहराई से विचार करते हैं। किताबें बच्चों की भाषा को संयोजित करती हैं, शब्दावली बढ़ाती हैं और विचारों को व्यक्त करने की क्षमता को मजबूत बनाती हैं।

आजकल कई घरों में किताबों की जगह गैजेट्स ने ले ली है। बच्चों के जन्मदिन पर खिलौनों और मोबाइल फोन का चलन बढ़ गया है, लेकिन किताब उपहार देने की परंपरा कम हो रही है। यह चिंता का विषय है। अगर हम बच्चों को केवल स्क्रीन सौंप दें तो वे जानकारी प्राप्त कर लेंगे, लेकिन कल्पना की उड़ान शायद खड़ी हो जाएगी। बिना कल्पना के मनुष्य मशीन जैसा बन जाता है।

स्कूलों और पुस्तकालयों की भी बड़ी जिम्मेदारी है। स्कूलों में केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित रहने के बजाय, बच्चों को कहानी पुस्तकों, जीवनियों, वैज्ञानिक कल्पनाओं और बाल साहित्य से जोड़ा जाना चाहिए। जब बच्चा विभिन्न प्रकार की पुस्तकें पढ़ता है तो उसकी सोच का दायरा बढ़ जाता है। पुस्तकालय एक ऐसा मंदिर है जहां ज्ञान और कल्पना का प्रकाश चुपचाप फैलता है। यदि हर गांव और हर स्कूल में सक्रिय पुस्तकालय हों, तो बच्चों की सोच में अद्भुत परिवर्तन हो सकते हैं।

बाल साहित्य का महत्व भी बहुत बड़ा है। अच्छा बाल साहित्य बच्चे के मन को समझता है। यह उसकी जिज्ञासाओं को जवाब देता है और उसके भीतर नई खोज की भावना जगाता है। पंजाबी बाल साहित्य में भी कई लेखकों ने बच्चों के लिए अद्भुत रचनाएँ लिखी हैं। लोक कथाएँ, कविताएँ एवं बाल उपन्यास बच्चों को अपनी मिट्टी एवं संस्कृति से जोड़ते हैं। यदि बच्चा अपनी भाषा में पढ़ता है तो वह अपनी जड़ों से अधिक मजबूती से जुड़ जाता है।

कल्पना केवल कहानियों तक ही सीमित नहीं है। यह बच्चे को चित्रकला, लेखन, संगीत, विज्ञान और खेल में भी नई दिशा प्रदान करती है। जो बच्चा कल्पना करता है, वह प्रश्न पूछता है। जो प्रश्न पूछता है, वही नया रास्ता बनाता है। इसलिए बचपन में पुस्तकों के साथ मित्रता बहुत आवश्यक है।

माता-पिता को बच्चों के लिए घर पर पढ़ने का माहौल बनाना चाहिए। यदि माता-पिता स्वयं किताबें पढ़ते हैं, तो बच्चे भी उनकी नकल करेंगे। हर दिन कुछ समय कहानियों के लिए रखा जा सकता है। छोटे बच्चों को लघु पुस्तकें दी जा सकती हैं, और बड़े बच्चों को रोचक उपन्यास, विज्ञान पुस्तकें और जीवनी दी जा सकती है। किताबों को साथी बनाया जाना चाहिए, न कि सजा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि बचपन, किताबें और कल्पनाएँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। जहाँ किताबें होती हैं, वहाँ विचार जन्म लेते हैं। जहाँ कल्पना होती है, वहाँ नई दुनिया बनती है। एवं जहाँ बचपन किताबों के साथ होता है, वहाँ भविष्य अधिक उज्ज्वल हो जाता है। हमें बच्चों को न केवल मोबाइल फोन देना चाहिए, बल्कि किताब भी देनी चाहिए, क्योंकि किताबें ही ऐसी चीजें हैं जो बचपन को कल्पना के आकाश में उड़ना सिखाती हैं।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

पीड़ा की परतें

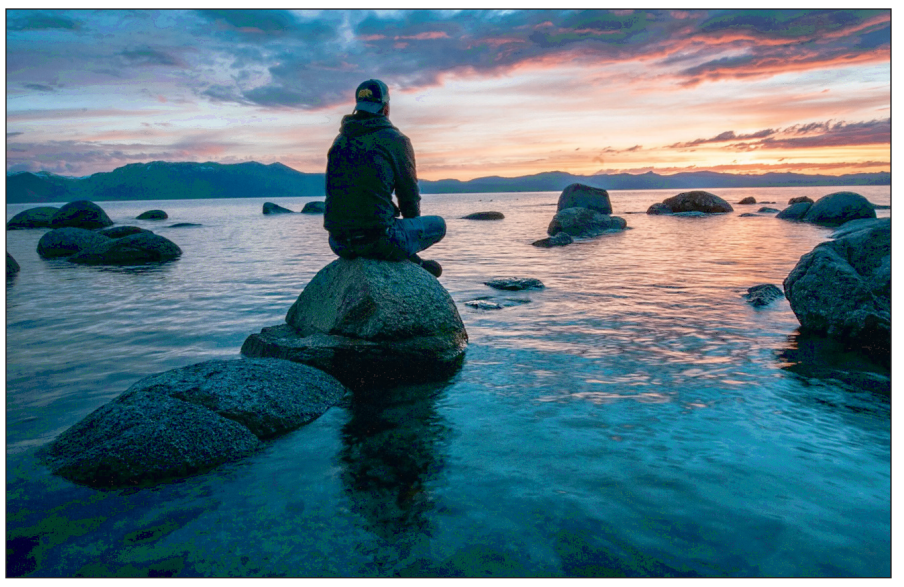

डॉ विजय गर्ग

मानव जीवन जितना बाहरी रूप से सरल और व्यवस्थित दिखाई देता है, उसके भीतर उतनी ही जटिल भावनाओं और अनुभवों की परतें छिपी होती हैं। हर व्यक्ति अपने भीतर किसी न किसी पीड़ा को संजोए रहता है—कभी वह स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, तो कभी मुस्कान की आड़ में छिप जाती है। यही पीड़ा की परतें जीवन को गहराई देती हैं, लेकिन कई बार यही परतें मन को बोझिल भी बना देती हैं।

पहली परत: व्यक्तिगत संघर्ष

जीवन की शुरुआत से ही मनुष्य संघर्षों से घिरा रहता है। शिक्षा, करियर, रिश्ते—हर मोड़ पर चुनौतियाँ होती हैं। असफलता, अपेक्षाओं का दबाव, और दूसरों से तुलना की प्रवृत्ति व्यक्ति के भीतर पहली पीड़ा की परत बनाती है। यह वह स्तर है जिसे अक्सर लोग समझ लेते हैं, क्योंकि यह बाहरी दुनिया से जुड़ा होता है।

दूसरी परत: भावनात्मक आघात

यह परत कहीं अधिक गहरी होती है। टूटते रिश्ते, विश्वासघात, अपनों की उपेक्षा या खोने का दर्द—ये सभी अनुभव मन में गहरी छाप छोड़ते हैं। इस प्रकार की पीड़ा अक्सर शब्दों में व्यक्त नहीं हो पाती। व्यक्ति सामान्य जीवन जीता हुआ भी भीतर से टूट रहा होता है। यह पीड़ा धीरे-धीरे मन के कोनों में जम जाती है और व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करने लगती है।

तीसरी परत: सामाजिक दबाव

समाज के नियम और अपेक्षाएँ भी पीड़ा की एक महत्वपूर्ण परत बनाते हैं। "लोग क्या कहेंगे" का डर व्यक्ति को अपने वास्तविक स्वरूप से दूर कर देता है। वह अपनी इच्छाओं, सपनों और भावनाओं को दबाकर सामाजिक मानकों के अनुसार जीने की कोशिश करता है। इस प्रक्रिया में उसकी आत्मा पर एक अदृश्य बोझ पड़ता है।

चौथी परत: अस्तित्व का प्रश्न

जीवन के किसी न किसी मोड़ पर व्यक्ति यह प्रश्न जरूर करता है—"मैं कौन हूँ? मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है?" जब इन प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर नहीं मिलता, तो एक गहरी आंतरिक बेचैनी जन्म लेती है। यह अस्तित्वगत पीड़ा सबसे जटिल होती है, क्योंकि इसका कोई तात्कालिक समाधान नहीं होता।

पाँचवीं परत: मौन और अनकही बातें

सबसे गहरी परत वह होती है, जिसे व्यक्ति किसी से साझा नहीं करता। यह अनकहे शब्दों, अधूरे सपनों और दबे हुए भावनाओं की परत है। बाहर से सब कुछ सामान्य दिखता है, लेकिन भीतर एक मौन संघर्ष चलता रहता है। यही मौन कई बार सबसे अधिक कष्टदायक होता है।

पीड़ा का प्रभाव

पीड़ा की ये परतें व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालती हैं। तनाव, चिंता, अवसाद और अकेलापन इसी के परिणाम हो सकते हैं। लेकिन यह भी सत्य है कि यही पीड़ा व्यक्ति को संवेदनशील, समझदार और परिपक्व बनाती है। जिसने दर्द को महसूस किया है, वही दूसरों के दर्द को सही मायने में समझ सकता है।

समाधान की राह

पीड़ा से मुक्ति का पहला कदम है—उसे स्वीकार करना।

अपने मन की बात किसी विश्वसनीय व्यक्ति से साझा करना आवश्यक है।

कला, लेखन, संगीत या ध्यान जैसे माध्यमों से भावनाओं को अभिव्यक्त करना सहायक हो सकता है।

स्वयं को समय देना और आत्म-देखभाल (self-care) को प्राथमिकता देना जरूरी है।

आवश्यकता पड़ने पर विशेषज्ञ की सहायता लेना भी एक सकारात्मक कदम है।

निष्कर्ष

पीड़ा जीवन का अभिन्न हिस्सा है, जिसे पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता। लेकिन इसे समझकर, स्वीकार कर और उससे सीख लेकर हम अपने जीवन को अधिक अर्थपूर्ण बना सकते हैं।

पीड़ा की परतें हमें तोड़ती जरूर हैं, लेकिन अगर सही दृष्टिकोण अपनाया जाए, तो यही परतें हमें मजबूत और संवेदनशील इंसान भी बनाती हैं।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस विशेष: घर तभी घर है जब रिश्तों में अपनापन हो

डॉ विजय गर्ग

हर वर्ष 15 मई को पूरी दुनिया में अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस मनाया जाता है। यह दिन केवल एक औपचारिक अवसर नहीं, बल्कि उस मूल भावना को याद करने का समय है जिसके सहारे मानव सभ्यता सदियों से आगे बढ़ती रही है—"परिवार"। आधुनिक जीवन की तेज रफ्तार, बढ़ती प्रतिस्पर्धा, तकनीक पर बढ़ती निर्भरता और बदलती जीवनशैली के बीच आज इंसान पहले से अधिक अकेला महसूस कर रहा है। ऐसे समय में परिवार ही वह स्थान है जहाँ व्यक्ति को अपनापन, सुरक्षा, विश्वास और भावनात्मक सहारा मिलता है।

जब बच्चा जन्म लेता है, तो उसकी पहली दुनिया परिवार ही होती है। माँ की गोद, पिता का संरक्षण, दादा-दादी का स्नेह, भाई-बहनों की नोकझोंक—ये सभी रिश्ते मिलकर जीवन को गर्माहट देते हैं। यही कारण है कि कहा जाता है—"मजबूत परिवार, मजबूत समाज की नींव होते हैं।"

परिवार: केवल रक्त संबंध नहीं, भावनाओं का संसार

परिवार को केवल खून के रिश्तों तक सीमित नहीं किया जा सकता। यह भावनाओं, जिम्मेदारियों, विश्वास और सहयोग का वह ताना-बाना है जो जीवन को संतुलित बनाता है। परिवार वह स्थान है जहाँ व्यक्ति बिना किसी डर के अपने सुख-दुख बाँट सकता है।

आज जब दुनिया में मानसिक तनाव, अवसाद और अकेलेपन की समस्या तेजी से बढ़ रही है, तब परिवार की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। एक स्नेही परिवार व्यक्ति को टूटने नहीं देता। कठिन परिस्थितियों में परिवार ही वह शक्ति बनता है जो इंसान को संभाल लेता है।

बदलती दुनिया और बदलते परिवार

समय के साथ परिवारों की संरचना में भी बदलाव आया है। पहले संयुक्त परिवारों का चलन अधिक था। एक ही घर में कई पीढ़ियाँ साथ रहती थीं। बच्चों को संस्कार, अनुभव और सामाजिक व्यवहार स्वाभाविक रूप से सीखने को मिलते थे। दादा-दादी कहानियाँ सुनाते थे, माता-पिता अनुशासन सिखाते थे और पूरा परिवार मिलकर हर खुशी-दुख साझा करता था।

लेकिन शहरीकरण, नौकरी की मजबूरियों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती चाह ने संयुक्त परिवारों को छोटे परिवारों में बदल दिया। अब अधिकतर लोग एकल परिवारों में रह रहे हैं। इससे सुविधाएँ तो बढ़ीं, लेकिन भावनात्मक दूरी भी बढ़ी है।

आज कई बच्चे दादा-दादी के स्नेह से दूर हैं। कई बुजुर्ग अकेलेपन का जीवन जी रहे हैं। माता-पिता काम में व्यस्त हैं और बच्चे मोबाइल व इंटरनेट की दुनिया में खोते जा रहे हैं। परिवार एक ही घर में रहते हुए भी भावनात्मक रूप से दूर होता जा रहा है।

तकनीक ने जोड़ा भी, तोड़ा भी

तकनीक ने परिवारों को जोड़ने का काम भी किया है। आज वीडियो कॉल के माध्यम से दूर बैठे लोग भी एक-दूसरे से जुड़े रह सकते हैं। विदेश में रहने वाला बेटा अपने माता-पिता से प्रतिदिन बात कर सकता है। परिवार के लोग फोटो और संदेश साझा कर सकते हैं।

लेकिन दूसरी ओर यही तकनीक रिश्तों में दूरी का कारण भी बन रही है। भोजन की मेज पर भी लोग मोबाइल में व्यस्त रहते हैं। बातचीत कम हो रही है। भावनाओं की जगह इमोजी ने ले ली है। बच्चे अपने अनुभव परिवार से साझा करने के बजाय सोशल मीडिया पर व्यक्त करने लगे हैं।

परिवार की गर्माहट केवल साथ रहने से नहीं आती, बल्कि समय देने, सुनने और समझने से आती है। यदि परिवार के सदस्य एक-दूसरे से संवाद ही न करें, तो घर केवल ईंट-पत्थर का ढांचा बनकर रह जाता है।

बच्चों के विकास में परिवार की भूमिका

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में परिवार सबसे पहली पाठशाला है। बच्चा जो देखता है, वही सीखता है। यदि घर में प्रेम, सम्मान और सहयोग का वातावरण होगा, तो बच्चा भी संवेदनशील और जिम्मेदार बनेगा।

परिवार बच्चों को केवल शिक्षा नहीं देता, बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाता है। सत्य बोलना, बड़ों का सम्मान करना, कठिनाइयों का सामना करना, दूसरों की मदद करना—ये सभी गुण परिवार से ही विकसित होते हैं।

आज जब बच्चों पर पढ़ाई और प्रतियोगिता का दबाव बढ़ रहा है, तब परिवार का सहयोग अत्यंत आवश्यक हो जाता है। केवल अंक और सफलता पर ध्यान देने के बजाय बच्चों की भावनाओं को समझना भी जरूरी है। कई बार बच्चे अपनी समस्याएँ व्यक्त नहीं कर पाते। ऐसे में परिवार को उनका मित्र बनना चाहिए।

बुजुर्गों का सम्मान: परिवार की असली पहचान

किसी भी परिवार की संस्कृति का पता इस बात से चलता है कि वह अपने बुजुर्गों के साथ कैसा व्यवहार करता है। बुजुर्ग अनुभवों का खजाना होते हैं। उन्होंने जीवन के संघर्षों को देखा होता है और वे नई पीढ़ी को सही दिशा दे सकते हैं।

लेकिन आधुनिक जीवन में कई बुजुर्ग उपेक्षा और अकेलेपन का सामना कर रहे हैं। वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या समाज के लिए चिंता का विषय है। यह केवल सामाजिक बदलाव नहीं, बल्कि भावनात्मक संकट का संकेत भी है।

बुजुर्गों को केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि समय, सम्मान और अपनापन चाहिए। जब बच्चे अपने दादा-दादी के साथ समय बिताते हैं, तो उनमें संवेदनशीलता और पारिवारिक मूल्यों का विकास होता है।

परिवार और मानसिक स्वास्थ्य

विश्व स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य एक बड़ी चुनौती बन चुका है। तनाव, चिंता, अवसाद और अकेलापन हर आयु वर्ग को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे समय में परिवार मानसिक मजबूती का सबसे बड़ा स्रोत बन सकता है।

एक ऐसा परिवार जहाँ सदस्य खुलकर अपनी बात कह सकें, जहाँ आलोचना के बजाय समझने का प्रयास हो, वहाँ मानसिक तनाव कम होता है। परिवार का भावनात्मक समर्थन व्यक्ति को आत्मविश्वास देता है।

कई शोध बताते हैं कि जिन लोगों के पारिवारिक संबंध मजबूत होते हैं, वे जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना अधिक बेहतर ढंग से कर पाते हैं।

परिवार और भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति में परिवार को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यहाँ परिवार केवल माता-पिता और बच्चों तक सीमित नहीं होता, बल्कि रिश्तों का एक विशाल वृक्ष होता है। त्योहार, विवाह, पारिवारिक समारोह और परंपराएँ लोगों को एक-दूसरे से जोड़ती हैं।

"वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना भारतीय संस्कृति की पहचान है। इसका अर्थ है—पूरा विश्व एक परिवार है। यह विचार हमें केवल अपने परिवार तक सीमित नहीं रहने, बल्कि समाज और मानवता के प्रति भी संवेदनशील बनने की प्रेरणा देता है।

परिवार टूटते क्यों जा रहे हैं?

आज परिवारों में बढ़ते विवादों के कई कारण हैं—

संवाद की कमी

अत्यधिक व्यस्त जीवनशैली

अहंकार और असहिष्णुता

आर्थिक तनाव

सोशल मीडिया का प्रभाव

पीढ़ियों के बीच विचारों का अंतर

छोटी-छोटी बातों पर रिश्ते टूटने लगे हैं। लोग समझौता और धैर्य खोते जा रहे हैं। जबकि परिवार को मजबूत बनाए रखने के लिए प्रेम के साथ-साथ सहनशीलता और त्याग भी जरूरी है।

रिश्तों की गर्माहट कैसे बनाए रखें?

1. परिवार को समय दें

सिर्फ साथ रहना पर्याप्त नहीं, साथ बैठना और बातचीत करना भी जरूरी है।

2. संवाद बनाए रखें

हर सदस्य की बात सुनना रिश्तों को मजबूत बनाता है।

3. डिजिटल संतुलन रखें

मोबाइल और सोशल मीडिया से कुछ समय दूर रहकर परिवार के साथ समय बिताएँ।

4. त्योहार और परंपराएँ साथ मनाएँ

सांस्कृतिक गतिविधियाँ परिवार को जोड़ती हैं।

5. बच्चों और बुजुर्गों को महत्व दें

परिवार की वास्तविक शक्ति यही दो पीढ़ियाँ होती हैं।

6. एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करें

सम्मान और विश्वास रिश्तों की नींव हैं।

अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस का संदेश

अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस हमें यह याद दिलाता है कि जीवन की असली खुशियाँ रिश्तों में छिपी होती हैं। धन, सफलता और आधुनिक सुविधाएँ जीवन को आसान बना सकती हैं, लेकिन परिवार जैसा भावनात्मक सहारा नहीं दे सकतीं।

यदि समाज को मजबूत बनाना है, तो परिवारों को मजबूत करना होगा। बच्चों को संस्कार, युवाओं को संतुलन और बुजुर्गों को सम्मान तभी मिलेगा जब परिवारों में प्रेम और संवाद बना रहेगा।

उपसंहार

परिवार केवल एक सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है। यह वह स्थान है जहाँ व्यक्ति को बिना शर्त स्वीकार किया जाता है। जीवन की हर सफलता अधूरी लगती है यदि उसे साझा करने के लिए अपना परिवार न हो।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आधुनिकता के साथ-साथ रिश्तों की गर्माहट को भी बचाकर रखें। परिवार में बिताया गया समय, प्रेम से कही गई बातें और कठिन समय में दिया गया साथ—यही जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है।

अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने परिवारों को केवल साथ रहने वाला समूह नहीं, बल्कि प्रेम, सम्मान और विश्वास से जुड़ा हुआ एक जीवंत संसार बनाएँगे।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त

नदी नहीं, अपनी संस्कृति और आने वाली पीढ़ियों को बचा रहे हैं श्रमवीर [धूप में तपते फावड़े और सपनों से सींची जा रही है बेतवा की जीवनधारा]

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

अनादि काल से जनजीवन, संस्कृति और सभ्यता को जीवनरस प्रदान करने वाली वेत्रवती आज पुनर्जागरण की दिव्य चेतना बनकर पुनः जाग उठी है। मध्यप्रदेश के रायसेन जिले के झिरी (कुम्हारा) गांव में स्थित पावन उद्गम क्षेत्र में 10 मई 2026 से आरम्भ "श्रमदान सप्ताह–2026" केवल स्वच्छता या संरक्षण का अभियान नहीं, बल्कि मृतप्राय होती प्रकृति में नवजीवन संचारित करने का विराट लोकयज्ञ बन चुका है। उपेक्षा, अतिक्रमण, मलबा संचयन और परिवर्तित ऋतुचक्र के प्रहारों से आहत इस तपोभूमि को पुनर्जीवित करने हेतु जनसामान्य प्रखर धूप में भी फावड़ा, टोकरी और अटूट संकल्प के साथ निरंतर श्रमरत है। यह प्रेरक दृश्य उद्घोष कर रहा है कि जब सामूहिक चेतना जागृत होती है, तब सूखी धाराएँ भी पुनः अमृतधारा बनकर प्रवाहित होने लगती हैं। यह महाअभियान केवल जलसंरक्षण का प्रयास नहीं, बल्कि भावी पीढ़ियों के सुरक्षित अस्तित्व, प्रकृति-संतुलन और जीवनमूल्यों के संरक्षण का सुदृढ़ आधार निर्मित कर रहा है।

सूखी पड़ती जीवनधारा को पुनर्जीवित करने का जो संकल्प गत वर्ष जागा, वही आज इस महाअभियान की सबसे बड़ी शक्ति है। स्थानीय नागरिकों, पर्यावरण साधकों और सामाजिक संगठनों के श्रम से उद्गम क्षेत्र में 55 लघु चेक डैम / अवरोधक बांध निर्मित किए गए। आरम्भ में यह कार्य असंभव प्रतीत होता था, किंतु सामूहिक संकल्प ने इसे संभव कर दिखाया। इन अवरोध बांधों के कारण बेतवा उद्गम लगभग छह माह तक जलमय रहा तथा जलधारा अविरल बहती रही। यह सफलता केवल निर्माणकार्य की उपलब्धि नहीं, बल्कि जागृत समाज की उत्तरदायी चेतना का प्रमाण थी। इसी प्रेरणा ने इस वर्ष के "श्रमदान सप्ताह" को और व्यापक बना दिया है। लोगों ने अनुभव किया कि निष्ठापूर्ण प्रयासों के आगे प्रकृति भी अपना आशीर्वाद देती है। यही विश्वास प्रतिदिन सैकड़ों श्रमसेवियों को उद्गम स्थल तक खींच ला रहा है।

जब समाज स्वयं प्रकृति के संरक्षण का संकल्प उठा लेता है, तब जनशक्ति परिवर्तन का सबसे बड़ा माध्यम बन जाती है। ग्राम सेवा समिति भोपाल के नेतृत्व में चल रहे इस अभियान में अनेक सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं की प्रेरक सहभागिता दिखाई दे रही है। बेतवा बिरादरी विदिशा, नमन सेवा समिति बैतूल, युवा फाउंडेशन भोपाल, गांधी भवन, सप्रे संग्रहालय, एनजीओ पाठशाला, स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर तथा मैनिट सहित अनेक संस्थाएं सक्रिय रूप से श्रमदान कर रही हैं। यह सहभागिता सिद्ध करती है कि पर्यावरण संरक्षण केवल शासन का दायित्व नहीं, बल्कि पूरे समाज का सामूहिक धर्म है। यहां औपचारिकता नहीं, बल्कि मिट्टी और नदी के प्रति आत्मीय समर्पण दिखाई देता है। यही भावना इस अभियान को जनभागीदारी से

जनआंदोलन में परिवर्तित कर चुकी है।

जब वृद्ध हाथों का अनुभव और युवाओं का उत्साह एक साथ मिट्टी से जुड़ता है, तब परिवर्तन इतिहास बन जाता है। इस महाअभियान में युवाओं के साथ सत्तर, पचहत्तर और अस्सी वर्ष की आयु पार कर चुके वरिष्ठजन भी अदम्य ऊर्जा से श्रमदान कर रहे हैं। प्रचंड गर्मी और कठिन श्रम के बीच उनका समर्पण युवा पीढ़ी के लिए जीवंत प्रेरणा बन गया है। सेवानिवृत्त वरिष्ठ वन अधिकारी श्री आजाद सिंह डबास, श्री कौशलेंद्र सिंह सहित अनेक अनुभवी पर्यावरण साधकों की उपस्थिति ने अभियान को दिशा और निरंतरता प्रदान की है। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि प्रकृति के प्रति दायित्व की कोई आयु-सीमा नहीं होती। पीढ़ियों के इस संगम ने यह संदेश भी दिया है कि जब अनुभव और युवा शक्ति साथ खड़े होते हैं, तब जनसंकल्प अजेय बन जाता है।

जब कोई व्यक्ति अपना अनुभव समाज और प्रकृति के पुनर्जागरण को समर्पित कर देता है, तब अभियान जनआस्था बन जाता है। डॉ. आर. के. पालीवाल इस महाअभियान की वही प्रेरक शक्ति हैं। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के पूर्व प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त रहे डॉ. पालीवाल ने प्रशासनिक जीवन के पश्चात प्रकृति संरक्षण को अपना जीवनसंकल्प बना लिया। उनका श्रम, नेतृत्व और समर्पण अभियान को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा रहा है। वे केवल आह्वान नहीं करते, बल्कि स्वयं फावड़ा उठाकर श्रमदान करते हैं। उनका मानना है कि नदियों की रक्षा केवल पर्यावरण नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की रक्षा है। उनके नेतृत्व में यह प्रयास श्रमदान से आगे बढ़कर पर्यावरणीय जनचेतना का आंदोलन बन चुका है। उनका जीवन संदेश देता है कि सेवानिवृत्ति अंत नहीं, बल्कि लोकसेवा का नया अध्याय है।

तपती धूप और कठिन परिस्थितियां भी श्रमसेवियों के उत्साह को डिगा नहीं सकीं। लगभग एक दर्जन समर्पित कार्यकर्ता प्रतिदिन सुबह आठ बजे से निरंतर श्रम में जुटे रहे। गत वर्ष निर्मित 55 अवरोध बांधों की मरम्मत के साथ 30 से अधिक नए अवरोध बांध भी तैयार किए जा चुके हैं। अभियान की सबसे बड़ी उपलब्धि उस सर्वोच्च पार्वती कुंड का पुनर्जीवन है, जो वर्षों से आठ फीट मलबे में दबा पड़ा था। आज उसी कुंड में एक फीट से अधिक निर्मल जल संचित है, जो वन्य जीवों के लिए जीवनस्रोत बन रहा है। ये उपलब्धियां श्रमसेवियों के समर्पण की सशक्त गवाही हैं और सिद्ध करती हैं कि सामूहिक श्रम से असंभव परिवर्तन भी संभव हो जाते हैं।

बेतवा उद्गम से उठी यह चेतना अब जनजागरण की व्यापक धारा बन चुकी है। स्थानीय सीमाओं से निकलकर यह अभियान दूर-दूर तक लोगों को प्रकृति संरक्षण के लिए प्रेरित कर रहा है। यह केवल समस्याओं का वर्णन नहीं, बल्कि समाधान का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। जो लोग प्रकृति को मात्र उपभोग का साधन मानते थे, उनके लिए यह अभियान स्पष्ट संदेश है कि प्रकृति की रक्षा केवल शब्दों से नहीं, बल्कि श्रम, समय और संवेदना के समर्पण से होती है। जलसंरक्षण के ये प्रयास भविष्य के गहराते जलसंकट के विरुद्ध मजबूत आधार बन सकते हैं।

सूखती नदियां केवल जल का संकट नहीं, बल्कि भविष्य के अस्तित्व का चेतावनी संकेत हैं। बेतवा उद्गम पर चल रहा यह श्रमदान सप्ताह किसी एक नदी के पुनर्जीवन तक सीमित नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति राष्ट्रीय उत्तरदायित्व का सशक्त आह्वान है। समय अब केवल नारों और शब्दों का नहीं, बल्कि धरती के लिए श्रम और समर्पण का है। एक फावड़ा, कुछ पल का श्रम और संरक्षण का संकल्प—यही सुरक्षित भविष्य की वास्तविक पूंजी है। बेतवा पुनर्जीवन का यह महाअभियान सिद्ध कर रहा है कि जब समाज प्रकृति के पक्ष में खड़ा होता है, तब सूखी धरती भी पुनः जीवन से भर उठती है।

भाजपा सहयोग मंच की पहल पर देवरिया पुलिस की बड़ी कार्रवाई, नाबालिग से हैवानियत का आरोपी गिरफ्तार

परिवहन विशेष न्यूज

देवरिया। भरौटा क्षेत्र में नाबालिग हिंदू बालिका के साथ हुई दरिंदगी की घटना को लेकर भाजपा सहयोग मंच द्वारा लगातार आवाज उठाए जाने और प्रशासन से कठोर कार्रवाई की मांग के बाद पुलिस ने त्वरित एक्शन लेते हुए आरोपी आशिक अंसारी को गिरफ्तार कर लिया है।

भाजपा सहयोग मंच के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष आशुतोष शर्मा के निर्देशन में संगठन के पदाधिकारियों ने घटना सामने आने के तुरंत बाद पुलिस प्रशासन से संपर्क कर आरोपी की जल्द गिरफ्तारी और पीड़िता को न्याय दिलाने की मांग की थी। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक अभिजीत आर शंकर के निर्देशन में पुलिस टीम सक्रिय हुई और कुछ ही समय में आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया।

भाजपा सहयोग मंच ने देवरिया पुलिस की तत्परता की सराहना करते हुए कहा कि समाज में बहन-बेटियों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और इस तरह की घटनाओं को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। संगठन के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष आशुतोष शर्मा ने कहा कि अपराधियों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई सुनिश्चित कराने के लिए मंच आगे भी मजबूती से आवाज उठाता रहेगा।

संगठन के पदाधिकारियों ने इस कार्रवाई में सहयोग करने वाले सभी सामाजिक कार्यकर्ताओं, स्थानीय नागरिकों और प्रशासनिक अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। मंच ने कहा कि जनसहयोग और प्रशासन की सक्रियता से ही समाज विरोधी तत्वों पर प्रभावी नियंत्रण संभव है।

भाजपा सहयोग मंच ने यह भी स्पष्ट किया कि भविष्य में भी यदि किसी बहन-बेटी के सम्मान और सुरक्षा पर आंच आती है तो संगठन पूरी मजबूती के साथ पीड़ित परिवार के साथ खड़ा रहेगा और न्याय की लड़ाई लड़ेगा।

N.C.R.B (एन.सी.आर.बी)
I.I.F.-I (एकीकृत जाँच फार्म -I)

FIRST INFORMATION REPORT
(Under Section 173 B.N.S.S)
प्रथम सूचना रिपोर्ट
(धारा 173 बी एन एस एस के तहत)

1. District/Unit (जिला/इकाई): देवरिया
P.S. (थाना): बरियारपुर Year (वर्ष): 2026
FIR No.(प्र.सू.रि. सं.): 0082
Date &Time of FIR(प्र.सू.रि. की दिनांक/समय): 10/05/2026 23:14

2.

S.No. (क्र.सं.)	Acts (अधिनियम)	Sections (धारा(एँ))
1	भारतीय न्याय संहिता (बी एन एस), 2023	64(1)
2	भारतीय न्याय संहिता (बी एन एस), 2023	351(3)
3	लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012	3
4	लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम, 2012	4

3.(a) Occurrence of offence (अपराध की घटना) :

1. Day (दिन):	Date From (दिनांक से):	Date To (दिनांक तक):
Time Period (समय अवधि):	Time From (समय से):	Time To (समय तक):

अभियान से संवर रहे नौनिहाल

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर । चौरी-चौरा के विभिन्न विद्यालयों में आर्ट ऑफ गिविंग का 13 वां स्थापना दिवस बेहद उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। "शेयर टू शाइन" अभियान के अंतर्गत आयोजित इन कार्यक्रमों में न केवल जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को उपयोगी सामग्री बांटी जा रही है, बल्कि उनमें मानवीय मूल्यों के बीज भी बोए जा रहे हैं।

इस सेवा यात्रा का शुभारंभ महादेव प्रसाद इंटर कॉलेज से हुआ, जिसके गंगा प्रसाद स्मारक इंटर कॉलेज सहित क्षेत्र के कई प्रमुख शिक्षण संस्थानों में जागरूकता कार्यक्रमों की श्रृंखला चलाई गई।

अभियान की सबसे खास बात बच्चों के बीच गीता प्रेस, गोरखपुर की प्रेरक पुस्तकों का वितरण है, जो विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा और भारतीय संस्कृति से जोड़ने का प्रयास है। 'आर्ट ऑफ गिविंग' के गोरखपुर जिला समन्वयक नियुक्त किए गए सचिन गौरी वर्मा के कुशल मार्गदर्शन में यह पूरा अभियान संचालित हो रहा है। उन्होंने बताया कि:"विश्व विख्यात समाजसेवी प्रोफेसर अच्युत सामंत द्वारा स्थापित यह संस्था सेवा, सहयोग और मानवता के पथ पर चलने की प्रेरणा देती है। हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों में सामाजिक संवेदनशीलता विकसित करना है ताकि वे भविष्य में एक जिम्मेदार नागरिक बन सके।

भावनाओं से सराबोर हुआ प्रतिभा सम्मान समारोह

विद्यालय और गुरु ही जीवन के सपनों को देते हैं सच्ची उड़ान - डॉ रामरतन बनर्जी

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। पी.एम. श्री राजकीय जुबिली इंटर कॉलेज, गोरखपुर का ऐतिहासिक परिसर शुक्रवार को भावनाओं, स्मृतियों और गौरव के अद्भुत संगम का साक्षी बना। अवसर था अन्नपूर्णा देवी मेमोरियल फाउंडेशन, गोरखपुर द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह का, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की मेधावी प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। समारोह की सबसे भावुक और ऐतिहासिक घड़ी तब आई, जब यश भारती सम्मान से अलंकृत डॉ. राम रतन बनर्जी लगभग 75 वर्ष बाद अपने पुराने विद्यालय जुबिली इंटर कॉलेज पहुंचे।

डॉ. राम रतन बनर्जी का विद्यालय आगमन केवल एक अतिथि का आगमन नहीं, बल्कि स्मृतियों की उस पावन धरती पर एक विद्यार्थी की आत्मीय वापसी थी, जहां कभी उनके व्यक्तित्व की नींव पड़ी थी। विद्यालय परिसर में पहुंचते ही उनके चेहरे पर बीते दिनों की स्मृतियों की चमक साफ दिखाई दे रही थी। उपस्थित लोगों के लिए यह क्षण अत्यंत भावुक और प्रेरणादायी रहा।

अपने उद्बोधन में डॉ. बनर्जी ने कहा कि जुबिली स्कूल के मंच पर खड़े होकर उनका मन अत्यंत भावुक हो उठा है। उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो वर्षों पुरानी स्मृतियां पुनः जीवित हो गई हों। उन्होंने बताया कि वे वर्ष 1943 में इसी विद्यालय में कक्षा तीन के विद्यार्थी थे। उस समय की शिक्षा, अनुशासन, संस्कार और गुरुजनों का स्नेह आज भी उनके जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है।

डॉ. बनर्जी ने वर्ष 1947 में देश की स्वतंत्रता के समय की स्मृतियों को साझा करते हुए बताया कि आजादी के दिन विद्यालय का वातावरण उत्साह, उमंग और देशभक्ति से भरा हुआ था। विद्यार्थियों से घर से दस-दस दीये लाने को कहा गया था। बच्चे गांधी टोपी पहनकर हाथों में दीये लिए विद्यालय पहुंचे थे और पूरा परिसर दीपों की रोशनी से जगमगा उठा था। उन्होंने कहा कि आधुनिक साधन भले कम थे, लेकिन शिक्षा के प्रति लगन, गुरुजनों के प्रति सम्मान और देश के लिए कुछ करने का संकल्प अत्यंत गहरा था।

विद्यार्थियों को संदेश देते हुए डॉ. राम रतन बनर्जी ने कहा कि जीवन में कितना भी आगे बढ़ जाएं, अपने विद्यालय और अपने गुरुओं को कभी नहीं भूलना चाहिए। विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व प्रवक्ता श्री पी.डी. दुबे, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी जे.एम. राव, अभियान थियेटर के अध्यक्ष श्रीनारायण पाण्डेय, डी.वी. पी.जी. कॉलेज गोरखपुर की प्राचार्य डॉ. श्रीमती शैल पाण्डेय तथा पूर्वांचल की वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सिका डॉ. रचना बनर्जी की गरिमामयी उपस्थिति रही।

अन्नपूर्णा देवी मेमोरियल फाउंडेशन की निदेशक डॉ. रोली लाट एवं डॉ. एस.के. लाट ने कहा कि प्रतिभाओं का सम्मान समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। जब मेधा, परिश्रम और संस्कार को सार्वजनिक मंच पर सम्मान मिलता है, तो युवा पीढ़ी के भीतर आत्मविश्वास और आगे बढ़ने की प्रेरणा मजबूत होती है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पहुंचे गोरखपुर

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आगमन शुक्रवार को जिले में हुआ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखनाथ मंदिर पहुंचकर सबसे पहले गुरु गोरखनाथ की पूजा अर्चना की इसके बाद अपने गुरु ब्रह्मलीन पूर्व महंत अवेद्यनाथ की पूजा अर्चना कर लोक कल्याण की कामना की। बताया जा रहा है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इसके बाद भाजपा द्वारा आयोजित कार्यक्रम प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन में शिरकत करेंगे इसके बाद वह गोड़धोइया नाला निर्माण का निरीक्षण कर इसकी प्रगति का जायजा लेंगे।

मानव जन्म का उद्देश्य आत्मिक उन्नति हैं -- स्वामी यादवेन्द्रानंद जी श्री रामचरितमानस -सह- गीता ज्ञान यज्ञ का भव्य आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

देवघर। दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान द्वारा तीन दिवसीय श्री राम चरितमानस एवं गीता ज्ञान यज्ञ का भव्य आयोजन परिणय वाटिका, दर्शनीया मोड़, देवघर में दिनांक 15 से 17 मई 2026 तक आरंभ हुआ ।जिसका समय संध्या 5 बजे से रात्रि 8 बजे तक हैं। इस कार्यक्रम के प्रथम दिन सर्व श्री आशुतोष महाराज जी के शिष्य स्वामी यादवेन्द्रानंद जी ने कहा कि आज के मानव भौतिकतावादी युग में विज्ञान और तकनीक में तो आगे बढ़ रहा है, किंतु आंतरिक शांति और संतोष से कोसों दूर है। जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति है। स्वामी यादवेन्द्रानंद जी ने आगे बताया कि मानव तन बड़ा दुर्लभ है, और साथ में क्षणभंगुर भी है, यानि जो कभी भी नष्ट हो सकता हैं। आज इंसान की सबसे बड़ी जरूरत इस तन के रहते रहते संसार के परम सत्य ईश्वर को प्राप्त करने की हैं ।जिससे मानव जन्म सार्थक हो सके। गुरु की कृपा से जीव आत्मा के भीतर विद्यमान परमात्मा का प्रत्यक्ष अनुभव करता है ,और यहीं से जीवन में प्रेम, शांति और करुणा का प्रवाह आरंभ होता है। "बड़े भाग्य मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ यह ग्रन्थ ही गवा।।"

मानव जीवन दुर्लभ है, इसे केवल सांसारिक सुखों में व्यर्थ न करें। इस में मंचाशीन साध्वी सुनीता भारती, सोनिया भारती, गायिका सरिता भारती, गायक पवन जी, तबला वादक रवि और चंदन जी साथ में स्टेज का संचालन सोनिया भारती जी ने की ।कार्यक्रम की समाप्ति पावन आरती से हुई। यह जानकारी समाज सेवी श्री प्रभाष गुप्ता ने दी।

झारखंड सरकार का क्लस्टर कॉलेज और ओड़िया भाषा उच्छेद का मामला गरमाया

कार्तिक कुमार परिच्छा , स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड राज्य सरकार का हाल ही में साइंस, आर्ट्स, ह्यूमैनिटीज और कॉमर्स के अलग-अलग कॉलेजों में फैकल्टी को अलग करके समुह कालेज ₹क्लस्टर कॉलेज₹ सिस्टम लागू करने का फैसला जहां अव्यवहारिक, असंवेदनशील है वहीं ओड़िया भाषा की पढ़ाई झारखंड के स्कूलों के बाद अब कोल्हान युनिवर्सिटी के अनेकों कालेजों में बंद होने जा रहा है ।यह उसऐतिहासिक इकरारनामे के मूंह पर करारा तमाचा है जिसे अक्षुण बनाए रखने हेतु केंद्र सरकार वचन बद्ध है । इतना ही नहीं महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मूर्मू अपने झारखंड राज्यपाल कार्यकाल में एक ओडिया भाषी भारतीय प्रशासनिक सेवा की महिला अधिकारी आराधना पट्टनायक के जरिये विद्यालयों में ओड़िया का पुनरूत्थान किया था उनके जाने के बाद की सरकारें भाषा को ही अनेक विद्यालयों में खत्म कर डाला । अब झारखंड के ओड़िया भाषियों में इसको लेकर रोष बढ रहा है । आगे यह विकराल रूप ले सकता है । सच पुछा जाय जाय तो अब झारखंड में उच्च शिक्षा के नाम वास्तविकता से कहीं दूर लगता है। एजुकेशनल इकोसिस्टम में इतना बड़ा बदलाव मुख्य अंश भागी (Share holders) - यानी छात्र, उनके अविभावक, प्राचार्य और शिक्षक - को ध्यान में रखे बिना कभी भी लागू नहीं किया जाना चाहिए था,पर सरकार ने कर डाला है । ओडिया को झारखंड की दूसरी राजकीय भाषा के तौर पर मान्यता दी गई है 2011 मे जिसे सब जानते । यह भी जाने कि झारखंड गठन के समय ओडिशा ने अपने एक राजस्व जिला कह कर सरायकेला खरसावां को केंद्र से मांग रख दिया था ।कारण ये दोनों ही इलाका ओडिशा का एक राजस्व जिला भी रहा ।पर कम लोग जानते कि 1911-12 मे जब जवाहर लाल नेहरू यहां आये थे इसी चाईबासा जहां कोल्हान यूनिवर्सिटी है वहीं गोपोबंधू दास से कहा था-यहां के मूल निवासी हो आदिवासी एवं ओडिया है नकी हिन्दी भाषी जहां हिंदी भाषी आकर रहते वे बहुत कम । तब आदिवासी लोगों ने संपर्क का भाषा ओड़िया को कहा था ।परन्तु 2020 की एजुकेशन पॉलिसी के अनुसार, ओडिया को सिलेबस में (1) एक मुख्य विषय Main Subject और (2) एक सह- विषय Co subject और (3) एक कोई अलग अलग क्षेत्रों या विषय मल्टी-डिसिप्लिनरी(Multi deciplanary subject) विषय और (4) स्नातक (under graduate) स्तर पर मातृभाषा के तौर पर शामिल किया गया है। दुर्भाग्य से, राज्य सरकार के फैसले के अनुसार, अगर सिर्फ़ बोहरा गड़ा कॉलेज में ओडिया पढ़ाई जाती है, तो पूर्वी सिंहभूम, पश्चिम सिंहभूम और सरायकेला खरसावां की ओडिया बोलने वाले इलाके में ओडिया मातृभाषा शिक्षा से वंचित रह कैसे जाएंगे लोग ?

बड़ी मछलियों तक 'पेपर लीक कांड' की जांच पहुंचने के आसान कम ?

डा. रमेश ठाकुर

'नीट प्रश्नपत्र लीक' मामले में धर पकड़ जारी है। पड़ताल का जिम्मा सीबीआई को सौंपा गया है। राजस्थान से कुछ आरोपी गिरफ्तार हुए हैं लेकिन जो आरोपी पकड़े गए हैं वह सियासत से संबंध रखते हैं। पुलिस अभिरक्षा में उनका सार्वजनिक रूप से मीडिया के कैमरों पर बोलना कि वह तो मोहरे मात्र हैं। खिलाड़ी तो कोई और ही हैं, वह बडे-बड़े स्तर के ? आरोपियों के मुख से निकले ये शब्द निश्चित रूप से निष्पक्ष जांच की उम्मीदों पर ग्रहण लगाने के लिए प्याप्त हैं। यहीं से मुकम्मल जांच की उम्मीदें टूटती दिखाई पड़ती हैं। साढ़े 22 लाख परीक्षार्थियों के भविष्य के साथ हुआ इतना बड़ा खिलवाड़ भी क्या एक कहानी बनकर सरकारी फाइलों में सिमट जाएगा ?

करोड़ों लोग नीट परीक्षा लीक कांड की जांच को अब धूमिल होते देख रहे हैं। तसल्ली उन अभिभावकों को भी कर लेनी चाहिए जो न्याय की उम्मीद लिए बैठे हैं। निष्पक्ष जांच-पड़ताल की आस अब इसलिए भी नहीं की जा सकती क्योंकि पूरा सिस्टम जांच छोड़कर, बड़ी मछलियों को बचाने में ही जुटेगा। ऐसा इस बार नहीं, पिछले तकरीबन सभी पेपर लीक कांड़ों में हुआ। नीट दाखिला परीक्षा है, भर्ती की पूरी की पूरी परीक्षा भारत में लीक होने लगी हैं। बावजूद इसके केंद्रीय हुकूमत कोई ऐसा उपाय नहीं कर पा रही जिससे परीक्षार्थियों के भविष्य के साथ किया जाने वाला खिलवाड़ रूक सके।

पिछले 7 वर्षों में यानी 2019 से लेकर 2026 मई तक, भारत में विभिन्न स्तरीय प्रतियोगी लगभग 70 परीक्षाओं के पेपर लीक हुए। आज तक किसी मामले की जांच न पूरी हुई और ना किसी मामले में न्याय हुआ। प्रत्येक मामलों में छोटे स्तर के कर्मचारी ही पकडे.गए जिन्हें कुछ महीनों बाद या एकाध वर्षों में जमानत मिल गई। सबसे पहले दाखिला परीक्षा कराने वाली एनटीए को उनकी जिम्मेदारियों से मुक्त कर देना चाहिए। एनटीए का कार्य इसलिए भी अब संतोषजनक नहीं क्योंकि वह पुराने तौर-तरीकों को अभी भी अपनाती है। अपने सिस्टम को रिफॉर्म भी नहीं करती। विश्व की प्रतिष्ठित भरोसेमंद परीक्षाओं से भी कुछ नहीं सीखती। इंटरनेट-कंप्यूटर के जमाने में भी प्रश्न पत्र मुद्रित करके परीक्षा केंद्रों पर पहुंचाने में विश्वास करती है। अगर ऐसा ही करना है तो प्रश्पपत्रों के सेट बदले हुए और अलग-अलग होने चाहिए ताकि किसी तरह की गड़बड़ी की संभावनाएं न हो। अगर खुदा ना खास्ता कुछ हो भी, तो पूरी परीक्षा रद ना की जाए, सिर्फ उसी सेंटर पर दोबारा परीक्षा करवाई जाए, जहां कुछ गड़बड़ी हुई हो ? अगर ऐसे आधुनिक तरीके अपनाए जाते तो परीक्षार्थियों के साथ खिलवाड़ न होता।

केंद्र से लेकर राज्य सरकारें भी अच्छे से जानती हैं कि भारत में आयोजित होने वाली हर चौथी प्रतियोगी परीक्षा का पेपर का लीक होता है जिसमें पुलिस भर्ती और शिक्षा परीक्षाएं कुख्यात हैं जबकि, नीट परीक्षा नौकरी या भर्ती की परीक्षा नहीं होती, मेडिकल कॉलेजों में दाखिले के लिए आयोजित होती है उसमें भी सेंधमारी, हद है ? गौरतलब है अगर पूर्ववर्ती पेपर लीक मामलों में सख्ती और स्वतंत्र-निष्पक्ष जांच हुई होती और आरोपियों के नाम सार्वजनिक किए गए होते और सजा के तौर पर उम्रकैद या मोटा हर्जाना वसूला गया होता, तो ऐसे कांड करने वाले भय खाते, डरते। भविष्य में गड़बड़ी करने से तौबा भी करते लेकिन लचीला कानून-प्रशासन का उदार रवैया और कमजोर सजा-जुर्माने से आरोपी तनिक भी नहीं डरते। एक कांड करते हैं, दूसरे की तैयारी में लगे होते हैं। फिलहाल मौजूदा नीट पेपर कांड पहला दोष तो परीक्षा कराने वाली संस्था 'नेशनल टेस्टिंग एजेंसी' यानी एनटीए का ही है। मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश की पात्रता परीक्षा नीट के सवाल लीक होने से पूरी परीक्षा रद्द करने की मजबूरी जितनी शर्मनाक है, उतनी ही चिंताजनक।

एनटीए का गठन 2017 में हुआ, तब से लेकर आज तक इस संस्था की विश्वसनीयता सवालों के घेरे में रही। 5 मई 2024 को भी जब इसी नीट परीक्षा में गडबड़झाला हुआ और मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा था। तब संस्था ने भविष्य में इस तरह की गलती दोबारा न करने का आश्वासन न सिर्फ अदालत को दिया था बल्कि केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय को भी भरोषा दिया था पर, बेशर्मी देखिए मात्र 24 महीनों बाद भी उससे पहले से भी बड़ा कांड़ कर दिया। पिछली दफा इन्होंने कई छात्रों को पूरे-पूरे 720 नंबर दे डाले थे जबकि वो सभी छात्र पढ़ने में सामान्य थे. उनके मुकाबले टापरों को उनसे कहीं कम नंबर दिए गए थे। इस बार तो उससे भी बड़ा ब्लंडर हुआ। पेपर लीक की सूचना सबसे पहले राजस्थान से बाहर निकली जहां, कई छात्रों के पास 140 से अधिक परीक्षा के मूल प्रश्नों से हूबहू प्रश्न गेस पेपरों में मिले।

लीक प्रश्नों पर सबसे पहले एनटीए की ओर से सफाई दी गई कि प्रश्न प्रिटिंग प्रेस से लीक हुए जबकि, सभी जानते हैं कि जहां पेपरों की छपाई होती है जहां परिंदा भी पर नहीं मार सकता। बेहद गुप्त स्थान होता है और वहां के कर्मचारियों को फोन तक रखने की इजाजत नहीं होती। ऐसे में प्रिंटिंग प्रेस से प्रश्नों के लीक होने का सवाल ही नहीं उठता। इस कांड में पूरा का पूरा सिंडिकेट शामिल होता है। समय का तकाजा है ऐसी विधि केंद्रीय लेबल पर बननी चाहिए ताकि छात्रों के जीवन से कोई खिलवाड़ न कर पाए। केंद्र सरकार को आगे आकर हस्तक्षेप करना चाहिए क्योंकि मौजूदा कांड में हुकूमत की चुप्पी सभी को अखर रही है। ऐसी घटनाओं के घट जाने के बाद छात्र सिर्फ सरकार से ही न्याय की उम्मीद करते हैं। उनकी उम्मीदें नहीं टूटनी चाहिए।

क्या हाइब्रिड परीक्षा मॉडल नीट-युजी को अधिक सुरक्षित बना सकता है?

डॉ. विजय गर्ग

"नीट-यूजी 2024 पेपर लीक विवाद के लगभग दो साल बाद, एवं "नीत-यूजी-2026" कार्यक्रम को अभूतपूर्व रूप से रद्द कर दिए जाने के बाद, केंद्र सरकार एक हाइब्रिड परीक्षा मॉडल की जांच कर रही है; जिसके तहत प्रश्नपत्रों को केन्द्रों तक डिजिटल रूप से भेजकर सुरक्षित परिस्थितियों में स्थानीय स्तर पर ही मुद्रित किया जा सकता है। अधिकारियों ने कहा कि इसे एक सुरक्षित विकल्प माना जा रहा है, क्योंकि बुनियादी ढांचे एवं लॉजिस्टिक संबंधी चुनौतियों के कारण 23 लाख उम्मीदवारों के लिए पूरी तरह से ऑनलाइन परीक्षा आयोजित करना अभी भी मुश्किल है।

स्वास्थ्य मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि आने वाले दिनों में स्वास्थ्य मंत्रालय, राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग एवं राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) के बीच एनईटी संबंधी संभावित सुधारों पर चर्चा होने की उम्मीद है; इस बारे में भी बताया गया है कि क्या परीक्षा प्रक्रिया के कुछ हिस्सों को डिजिटल बनाया जा सकता है अधिकारियों ने कहा कि राधाकृष्णन समिति द्वारा अनुशंसित, प्रस्तावित ₹कम्प्यूटर-सहायता प्राप्त सुरक्षित पेपर-आधारित परीक्षा₹ पूरी तरह से ऑफलाइन एवं पूरी तरह कंप्यूटर आधारित परीक्षाओं के बीच एक संभावित मध्य मार्ग बन रही है। प्रस्ताव के तहत, परीक्षा से कुछ समय पहले ही एन्क्रिप्टेड प्रश्न पत्रों को परीक्षा केंद्रों या क्षेत्रीय केन्द्रों में गोपनीय सर्वर पर भेज दिया जाएगा तथा उच्च गति वाले सुरक्षित प्रिंटर का उपयोग करके स्थानीय स्तर पर मुद्रित किया जाएगा।

एक अधिकारी ने कहा कि "इसका उद्देश्य प्रश्नपत्रों के परिवहन एवं भंडारण के दौरान मैनुअल हैंडलिंग की समस्या को कम करना है; क्योंकि ये प्रक्रियाएँ कमजोर अवस्थाओं में होती हैं। परीक्षा समय के करीब ही परीक्षा पत्र छापने से लीक होने का खतरा कम हो सकता है।" अधिकारियों के अनुसार, इस हाइब्रिड प्रणाली में एक ही दिन की ऑफलाइन परीक्षा का लाभ बरकरार रखा जा सकता है; ताकि सामान्यीकरण संबंधी विवादों से बचा जा सके एवं विभिन्न शिफ्टों में कठिनाई स्तर भी अलग-अलग हो सकें। साथ ही, छोटे शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों सहित कई केंद्रों को यह परीक्षा आयोजित करने की अनुमति मिल सकती है।

एक अन्य वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि परीक्षा के बड़े पैमाने एवं मल्टी-शिफ्ट टेस्टिंग से जुड़ी जटिलताओं के कारण नीट को पूरी तरह ऑनलाइन करना कठिन है। भारत में वर्तमान में लगभग 25 लाख छात्रों के लिए एक दिन की कंप्यूटर-आधारित परीक्षा आयोजित करने हेतु बुनियादी ढांचे का अभाव है। सबसे अधिक, प्रतिदिन केवल 1 से 1.5 लाख उम्मीदवारों को ही समायोजित किया जा सकता है। अधिकारी ने कहा कि कई बदलावों से सामान्यीकरण, निष्पक्षता और विभिन्न सत्रों में तुलना के मुद्दे सामने आएंगे। अधिकारी ने कहा कि छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले कई नीट उम्मीदवार कंप्यूटर-आधारित परीक्षण से समान रूप से परिचित नहीं होंगे। विभिन्न जिलों के स्कूलों में आयोजित ऑफलाइन परीक्षाओं के विपरीत, ऑनलाइन परीक्षाओं के लिए विशेष केंद्र, स्थिर इंटरनेट, निर्बाध बिजली और तकनीकी कर्मचारियों की आवश्यकता होती है।

अधिकारियों ने कहा कि पूर्णतः ऑनलाइन प्रणाली से केंद्रों की संख्या में भी काफी कमी आ सकती है तथा कई छात्रों को बड़े शहरों में जाने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है। साइबर सुरक्षा जोखिम, सर्वर विफलताएं और तकनीकी व्यवधान भी विचारणीय मुद्दे हैं। उन्होंने कहा कि किसी भी परिवर्तन के लिए महीनों की तैयारी की आवश्यकता होगी, जिसमें बुनियादी ढांचे का विस्तार, मॉक टेस्ट और छात्रों को परिचित कराने वाले अभ्यास शामिल होंगे।

हालांकि, हाइब्रिड प्रणाली को लागू करने से पहले पायलट परीक्षण, बुनियादी ढांचे का आकलन और विस्तृत परिचालन प्रोटोकॉल की आवश्यकता होगी। ये अभी भी चर्चाएँ हैं, एवं अभी तक कुछ भी अंतिम रूप नहीं दिया गया है। लेकिन एक अधिकारी ने कहा कि हाल के वर्षों में बार-बार विवादों के बाद, इस बात पर व्यापक सहमति है कि सुधार की आवश्यकता है।

एनईटी-यूजी 2024 विवाद के बाद, परीक्षा की सुरक्षा एवं पारदर्शिता को मजबूत करने हेतु सुधारों की सिफारिश करने हेतु राधाकृष्णन समिति का गठन किया गया

डॉ. विजय गर्ग, सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

विजय कुमार अपने साथियों सहित एक संयुक्त प्रतिनिधिमंडल के रूप में नेशनल एस.सी. कमीशन के चेयरमैन किशोर मकवाना जी से मिले

अमृतसर, 15 मई (साहिल बेरी)

पंजाब म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन सीवरमैन इम्प्लाई यूनियन के पंजाब प्रधान कॉमरेड विजय कुमार जी अपने साथियों सहित एक संयुक्त प्रतिनिधिमंडल के रूप में नेशनल एस.सी. कमीशन के चेयरमैन श्री किशोर मकवाना जी से मिले।

इस दौरान उन्होंने पंजाब के विभिन्न नगर निगमों, नगर काउंसिलों, नगर पालिकाओं और नगर समितियों में कार्यरत सीवरमैन, सफाई कर्मचारी और अन्य चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को आ रही गंभीर समस्याओं के बारे में अवगत कराया। उन्होंने बताया कि वर्तमान समय में बढ़ती महंगाई के कारण कम वेतन में परिवार का गुजारा करना अत्यंत कठिन हो गया है।

प्रतिनिधिमंडल द्वारा अपनी प्रमुख मांगें भी चेयरमैन साहिब के समक्ष रखी गईं, जिनमें मुख्य रूप से—

रिजर्वेशन को समाप्त कर लंबे समय से रोस्टर लागू किया गया है, जबकि कर्मचारी पहले से ही आरक्षित श्रेणी में आते हैं।

पुरानी पेंशन योजना लागू की जाए।

किसी कर्मचारी की मृत्यु होने पर उसके परिवार को शीघ्र नौकरी प्रदान की जाए।

डोर-टू-डोर कूड़ा एकत्र करने वाले कर्मचारियों पर ठेकेदारी प्रणाली लागू न की जाए।

ओवरएज कर्मचारियों को नियमित किया जाए।

शेष चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों जैसे सीवरमैन, सफाई कर्मचारी, माली, बेलदार, ड्राइवर आदि की नियमित भर्ती की जाए।

चेयरमैन साहिब ने यूनियन को आश्वासन दिया कि जल्द ही स्थानीय सरकार विभाग, चंडीगढ़ के साथ बैठक कर इन समस्याओं का समाधान किया जाएगा।

यूनियन की ओर से चेयरमैन साहिब का धन्यवाद किया गया। साथ ही प्रधान कॉमरेड विजय कुमार जी ने उपस्थित साथियों—दीपक गिल, नरेंद्र कुमार सोनी, राजेश कुमार एवं अन्य सदस्यों का भी आभार व्यक्त किया।

नीट-यूजी पेपर लीक प्रकरण 2026- दोबारा परीक्षा 21 जून 2026- नीट परीक्षा 2027 से पूरी तरह कंप्यूटर आधारित -सवाल वही डिजिटल युग,पेपर लीक और शिक्षा व्यवस्था का संकट: क्या तकनीक से तेज हो गया है परीक्षा माफियाओं का नेटवर्क?

भारत में प्रतियोगी परीक्षाएं केवल रोजगार या प्रवेश का माध्यम नही, करोड़ों युवाओं के सपनों, सामाजिक प्रतिष्ठा और भविष्य की दिशा निर्धारित करने वाली जीवनरेखा हैं

"मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस॒ मॉडल अब तकनीक- संचालित संगठित अपराध में बदल चुका है,जहां डमी कैंडिडेट, डिजिटल इंपर्सोनेशन, बायोमेट्रिक धोखाधड़ी और प्रश्नपत्र खरीद-फरोख्त एक समानांतर उद्योग का रूप ले चुके हैं -एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत आज उस दौर से गुजर रहा है जहां एक ओर डिजिटल क्रांति ने शासन,प्रशासन,शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, व्यापार और नागरिक सुविधाओं को अभूतपूर्व गति दी है,वहीं दूसरी ओर इसी तकनीकी विस्तार ने साइबर अपराध,डेटा चोरी, डिजिटल धोखाधड़ी और संगठित परीक्षा माफियाओं को भी नई ताकत प्रदान कर दी है। आधुनिक तकनीक ने जीवन को आसान बनाया,लेकिन इसी तकनीक का दुरुपयोग व्यवस्था की विश्वसनीयता को चुनौती देने लगा है।विशेष रूप से शिक्षाक्षेत्र में तकनीक आधारित अपराधों ने जिस प्रकार प्रवेश किया है,उसने देश की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षाओं की साख तक को हिला दिया है।भारत में प्रतियोगी परीक्षाएं केवल रोजगार या प्रवेश का माध्यम नहीं हैं, बल्कि करोड़ों युवाओं के सपनों, सामाजिक प्रतिष्ठा और भविष्य की दिशा निर्धारित करने वाली जीवनरेखा हैं।जब इन्हीं परीक्षाओं की गोपनीयता पर सवाल उठने लगें, तब यह केवल प्रशासनिक विफलता नहीं रह जातीबल्कि राष्ट्रीय नैतिक संकट का रूप ले लेती है। मैंएडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि, वर्ष 2026 का नीट-यूजी पेपर लीक प्रकरण इसी गहराते संकट का सबसे बड़ा उदाहरण बनकर सामने आया है। 3 मई 2026 को आयोजित हुई मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी को पेपर लीक और व्यापक अनियमितताओं के आरोपों के बाद रद्द करना पड़ा, सरकार ने पुनः परीक्षा की तिथि 21 जून 2026 घोषित की तथा यह भी स्पष्ट किया कि वर्ष 2027 से नीट परीक्षा पूरी तरह कंप्यूटर आधारित यानी सीबीटी मोड में आयोजित की जाएगी। यह निर्णय भारतीय परीक्षा प्रणाली में एक बड़े परिवर्तन का संकेत माना जा रहा है। 22 लाख से अधिक विद्यार्थियों की महीनों की मेहनत, मानसिक तनाव और अभिभावकों की अपेक्षाएं अचानक अनिश्चितता में बदल गईं। पूरे देश में छात्रों के विरोध प्रदर्शन, सोशल मीडिया अभियानों और परीक्षा प्रणाली पर तीखे सवालों ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत की परीक्षा व्यवस्था अब केवल प्रशासनिक सुधारों से नहीं, बल्कि संरचनात्मक परिवर्तन की मांग कर रही है। विडंबना यह है कि यह संकट ऐसे समय सामने आया, जब सरकार ने वर्ष 2024 में"पब्लिकएग्जामिनेशंस (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट 2024" लागू किया था। इस कानून को आम भाषा में "एंटी पेपर लीक कानून" कहा जाने लगा। दावा किया गया था कि अब पेपर लीक जैसे अपराधों पर निर्णायक रोक लगेगी, दोषियों को कठोर दंड मिलेगा और परीक्षा प्रणाली अधिक सुरक्षित बनेगी। इस कानून के अंतर्गत संगठित नकल, प्रश्नपत्र लीक, डिजिटल हैकिंग, फर्जीवाड़ा और परीक्षा प्रक्रिया में तकनीकी हस्तक्षेप जैसे अपराधों के लिए कड़ी सजा और भारी जुर्माने का प्रावधान किया गया था। लेकिन 2026 के नीट कांड ने यह दिखा दिया कि केवल कानून बना देना पर्याप्त नहीं होता; अपराधी नेटवर्क यदि तकनीकी रूप से अधिक उन्नत और संगठित हो जाएं, तो वे कानून की कमजोरियों और प्रशासनिक ढिलाई का आसान व सटीकता से रास्ता खोज लेते हैं।

साथियों, आज का पेपरमाफिया पारंपरिक अपराधीनहीं रह गया है। यह एक अत्यंत संगठित, बहुस्तरीय और तकनीकी रूप से दक्ष नेटवर्क में बदल चुका है। इसमें शिक्षा संस्थानों से जुड़े लोग,कोचिंग नेटवर्क, साइबर अपराधी, डेटा ब्रोकर, स्थानीय एजेंटतकनीकी विशेषज्ञ और कई बार भ्रष्ट अधिकारी तक शामिल पाए जाते हैं। यही कारण है कि प्रश्नपत्र लीक की घटनाएं केवल किसी एक राज्य या परीक्षा तक सीमित नहीं रह गईं। यह समस्या राष्ट्रीय स्तर पर फैल चुकी है। तकनीक का उपयोग अब केवल पढ़ाई या ऑनलाइन आवेदन तक सीमित नहीं है, बल्कि ब्लूटूथ डिवाइस, माइक्रो ईयरपीस, एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग, डार्क वेब चैनल और डिजिटल भुगतान नेटवर्क के जरिए संगठित धोखाधड़ी को आसान व सटीकता से अंजाम दिया जा रहा है।

साथियों, नीट-यूजी 2026 विवाद के बाद केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने 15 मई 2026 को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कई महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि दोषियों को पाताल से भी ढूंढ निकाला जाएगा और किसी भी स्तर पर अपराधियों को बख्शा नहीं जाएगा। यह बयान केवल राजनीतिक प्रतिक्रिया नहीं था, बल्कि उस जनआक्रोश का प्रतिबिंब था जो पूरे देश में दिखाई दे रहा था। सरकार ने पुनः परीक्षा की तिथि 21 जून 2026 घोषित की तथा यह भी स्पष्ट किया कि वर्ष 2027 से नीट परीक्षा पूरी तरह कंप्यूटर आधारित यानी सीबीटी मोड में आयोजित की जाएगी। यह निर्णय भारतीय परीक्षा प्रणाली में एक बड़े परिवर्तन का संकेत माना जा रहा है।नीट-यूजी 2026 की पुनर्परीक्षा से जुड़े कई महत्वपूर्ण बदलाव घोषित किए गए। छात्रों को परीक्षा केंद्र शहर बदलने की सुविधा देने का निर्णय लिया गया ताकि जिन क्षेत्रों में अनियमितताओं की आशंका रही, वहां के विद्यार्थी अपनी पसंद के शहर में परीक्षा दे सकें। एडमिट कार्ड 14 जून तक जारी करने की घोषणा की गई और दोपहर 2 बजे से शाम 5:15 बजे तक परीक्षा समय निर्धारित किया गया, जिसमें अतिरिक्त 15 मिनट का समय भी जोड़ा गया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि दोबारा परीक्षा के लिए छात्रों से कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाएगा। यह निर्णय छात्रों के मानसिक और आर्थिक दबाव को कम करने के उद्देश्य से लिया गया। लेकिन वास्तविक प्रश्न केवल पुनर्परीक्षा का नहीं है। बड़ा प्रश्न यह है कि आखिर बार-बार ऐसी घटनाएं क्यों हो रही हैं? क्या भारत की पारंपरिक पेन-एंड-पेपर परीक्षा प्रणाली अब अप्रासंगिक हो चुकी है? क्या परीक्षा माफिया तकनीकी रूप से प्रशासन से आगे निकल चुके हैं? और क्या केवल सीबीटी मोड में परिवर्तन से यह समस्या समाप्त हो जाएगी?

साथियों, इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए हमें भारत की परीक्षा संस्कृति और उसके सामाजिक-आर्थिक दबावों को समझना होगा। भारत में प्रतियोगी परीक्षाएं केवल अकादमिक प्रक्रिया नहीं हैं। मेडिकल और इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में प्रवेश को सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक सुरक्षा और पारिवारिक सम्मान से जोड़ दिया गया है। लाखों परिवार अपनी पूरी बचत कोचिंग, हॉस्टल और अध्ययन सामग्री पर खर्च करते हैं। कई विद्यार्थी वर्षों तक ड्रॉप लेकर तैयारी करते हैं। ऐसी स्थिति में जब सफलता का दबाव अत्यधिक बढ़ जाता है, तब अवैध रास्तों का आकर्षण भी बढ़ने लगता है। यही वह जमीन है जहां परीक्षा माफिया अपना नेटवर्क तैयार करते हैं।

साथियों, यहां 2003 में रिलीज हुई प्रसिद्ध फिल्म मुन्ना भाई एम.बी.बी.एस का संदर्भ अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। उस समय दर्शकों ने फिल्म को एक मनोरंजक कॉमेडी-ड्रामा के रूप में देखा था, जिसमें मेडिकल शिक्षा व्यवस्था की खामियों और फर्जी प्रवेश संस्कृति पर व्यंग्य किया गया था। लेकिन आज वास्तविक जीवन में जो घटनाएं सामने आ रही हैं,उन्होंने यह एहसास करा दिया है कि वह केवल फिल्मी कल्पना नहीं थी। "मुन्ना भाई" मॉडल अब तकनीक-संचालित संगठित अपराध में बदल चुका है, जहां डमी कैंडिडेट, डिजिटल इंपर्सोनेशन, बायोमेट्रिक धोखाधड़ी और प्रश्नपत्र खरीद-फरोख्त एक समानांतर उद्योग का उच्च स्तरीय रूप ले चुके हैं।

साथियों साइबर अपराध और परीक्षा प्रणाली के इस गठजोड़ ने प्रशासन के सामने नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। पहले प्रश्नपत्र प्रिंटिंग प्रेस या परिवहन के दौरान लीक होते थे, लेकिन अब डिजिटल सर्वर, एन्क्रिप्टेड डेटा ट्रांसफर और नेटवर्क सुरक्षा भी जोखिम में हैं। यदि परीक्षा डेटा का प्रबंधन पर्याप्त साइबर सुरक्षा के साथ न किया जाए, तो हैकिंग, डेटा चोरी और अंदरूनी मिलीभगत के जरिए पूरी प्रणाली प्रभावित हो सकती है। यही कारण है कि विशेषज्ञ केवल कानूनी सख्ती नहीं, बल्कि साइबर इंफ्रास्ट्रक्चर के उन्नयन पर भी सटीकता से जोर दे रहे हैं।

साथियों, भारत में सीबीटी यानी कंप्यूटर आधारित परीक्षा प्रणाली को भविष्य कासमाधान माना जा रहा है। दुनिया के कई विकसित देशों में बड़े पैमाने की प्रवेश परीक्षाएं डिजिटल माध्यम से आयोजित होती हैं। इससे प्रश्नपत्र वितरण, परिवहन और प्रिंटिंग से जुड़े जोखिम कम हो जाते हैं। प्रत्येक उम्मीदवार के लिए प्रश्नों का क्रम बदलना, अलग-अलग सेट बनाना और रियल टाइम मॉनिटरिंग संभव हो जाती है। एआई आधारित निगरानी, फेस रिकग्निशन और डिजिटल लॉगिंग जैसी तकनीकें परीक्षा पारदर्शिता को मजबूत बना सकती हैं। भारत में भी बैंकिंग, प्रबंधन और सरकारी भर्ती की अनेक परीक्षाएं पहले से सीबीटी मोड में सफलता पूर्वक आयोजित हो रही हैं।हालांकि केवल सीबीटी मोड अपनाना अंतिम समाधान नहीं माना जा सकता। डिजिटल परीक्षा प्रणाली के अपने खतरे भी हैं। यदि साइबर सुरक्षा कमजोर रही, तो सर्वर हैकिंग, रिमोट एक्सेस, सॉफ्टवेयर मैनिपुलेशन और डेटा टैंपरिंग जैसी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में इंटरनेट और कंप्यूटर सुविधाओं की असमानता भी एक बड़ी चुनौती है। भारत जैसे विशाल देश में करोड़ों छात्रों के लिए समान डिजिटल अवसंरचना उपलब्ध कराना आसान नहीं होगा। इसलिए सीबीटी प्रणाली के साथ साइबर सुरक्षा, डिजिटल साक्षरता और तकनीकी पारदर्शिता को समान प्राथमिकता देनी होगी। नीट विवाद ने एक और गंभीर प्रश्न खड़ा किया है क्या परीक्षा आधारित शिक्षा मॉडल स्वयं संकट में है? आज पूरी शिक्षा व्यवस्था अंक, रैंक और कटऑफ की होड़ में बदल चुकी है। छात्रों पर मानसिक दबाव लगातार बढ़ रहा है। कोचिंग उद्योग अरबों रुपये का व्यवसाय बन चुका है। जब सफलता को केवल परीक्षा परिणामों से मापा जाता है, तब नैतिकता कमजोर पड़ने लगती है। विशेषज्ञ मानते हैं कि केवल परीक्षा सुरक्षा बढ़ाने से समस्या का स्थायी समाधान नहीं होगा, बल्कि शिक्षा व्यवस्था को अधिक बहुआयामी, कौशल आधारित और मानसिक स्वास्थ्य के अनुकूल बनाना होगा।

साथियों, इस पूरे घटनाक्रम में सोशल मीडिया की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही। एक्स, यूट्यूब, टेलीग्राम और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर छात्रों ने अपनी आवाज बुलंद की। लाखों पोस्ट, वीडियो और लाइव चर्चाओं ने सरकार पर दबाव बनाया। यह डिजिटल लोकतंत्र की शक्ति भी है और चुनौती भी। जहां एक ओर सोशल मीडिया पारदर्शिता और जनदबाव का माध्यम बना, वहीं दूसरी ओर अफवाहें, फर्जी दस्तावेज और भ्रामक सूचनाएं भी तेजी से फैलीं। इसलिए डिजिटल युग में सूचना प्रबंधन भी उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है जितना परीक्षा प्रबंधन।केंद्रीय जांच ब्यूरो को जांच सौंपे जाने के बाद कई गिरफ्तारियां हुई हैं और जांच एजेंसियां सक्रिय रूप से नेटवर्क की परतें खोल रही हैं। लेकिन यह केवल कुछ व्यक्तियों की गिरफ्तारी का मामला नहीं है। यह उस व्यापक समानांतर व्यवस्था को समाप्त करने की चुनौती है जो शिक्षा व्यवस्था की कमजोरियों का फायदा उठाकर फल-फूल रही है। यदि समाज, प्रशासन, शिक्षा संस्थान और तकनीकी विशेषज्ञ मिलकर दीर्घकालिक सुधार नहीं करेंगे, तो हर नया कानून कुछ समय बाद अप्रभावी साबित हो सकता है।

साथियों, वास्तव में, "पब्लिक एग्जामिनेशंस (प्रिवेंशन ऑफ अनफेयर मीन्स) एक्ट 2024" की विफलता का अर्थ यह नहीं है कि कानून अनावश्यक था,बल्कि यह दर्शाता है कि कानून के साथ मजबूत क्रियान्वयन, तकनीकी क्षमता, जवाबदेही और संस्थागत ईमानदारी भी आवश्यक है। किसी भी कानून की सफलता उसके लागू होने की दक्षता पर निर्भर करती है। यदि परीक्षा संचालन में शामिल तंत्र पारदर्शी और जवाबदेह न हो, तो सबसे कठोर कानून भी कागज तक सीमित रह जाते हैं।आज भारत एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। एक ओर दुनिया की सबसे युवा आबादी, डिजिटल अर्थव्यवस्था और तकनीकी क्षमता है; दूसरी ओर शिक्षा व्यवस्था में बढ़ता अविश्वास, साइबर अपराध और परीक्षामाफियाओं का खतरा है। यदि भारत को वैश्विक ज्ञान शक्ति बनना है, तो उसे अपनी परीक्षा प्रणाली को विश्वसनीय, पारदर्शी और तकनीकी रूप से सुरक्षित बनाना ही होगा। नीट-यूजी 2026 विवाद केवल एक परीक्षा का संकट नहीं, बल्कि उस भरोसे की परीक्षा है जिस पर भारत का भविष्य टिका हुआ है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे के यह समय केवल दोषियों को पकड़ने का नहीं, बल्कि पूरी प्रणाली का पुनर्निर्माण करने का है। कानून, तकनीक, नैतिक शिक्षा,साइबर सुरक्षा, प्रशासनिक जवाबदेही और सामाजिक मानसिकता इन सभी स्तरों पर व्यापक सुधारों की आवश्यकता है। यदि ऐसा नहीं किया गया, तो हर नई तकनीक अपराधियों के लिए नया हथियार बनती जाएगी। लेकिन यदि भारत इस संकट से सीख लेकर शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक, पारदर्शी और सुरक्षित बना लेता है, तो यही संकट भविष्य के सुधारों की ऐतिहासिक शुरुआत भी सिद्ध हो सकता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023